कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN : 2583-4991

▸ भोपाल मंगलवार 14 से 20 मई 2024 ▸ वर्ष-24 ▸ अंक-51 ▸ पृष्ठ-16 ▸ मूल्य-13 रु. ▸ RNI No. MP HIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र. एम.पी./भोपाल/625/2024-26

प्रधानमंत्री फसल बीमा आधी कीमत पर मिलेगा

प्रति हेक्टेयर 7.48 प्रतिशत रह गयी प्रीमियम दर

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसलों का बीमा अब आधी कीमत पर मिलेगा। प्रति हैक्टेयर प्रीमियम की दर पहली बार औसतन 7.48 प्रतिशत रह गई है। इसमें धान, सोयाबीन, मक्का, गेहूं, ज्वार-बाजरा, अरहर, मूंगफली, तिल, कपास, मूंग, चना, सरसों, अलसी और उड़द शामिल है। सरकार ने 30 अप्रैल को नई प्रीमियम दरों की अधिसूचना जारी की है।

पहली बार फसल बीमा की यह दर 10 प्रतिशत से नीचे आई है। इसके पीछे बड़ी वजह है कि किसानों ने बीमा कंपनियों से क्लेम लेना कम कर दिया है। बीते 5 साल में बीमा क्लेम में 6 से 7 गुना तक गिरावट आई है।

प्राकृतिक आपदा भी ऐसी नहीं हुई कि क्लेम बढ़े। इसके अलावा फसल उपज का आकलन सेटेलाइट रिमोट सेंसिंग तकनीक से किया जा रहा है। इसकी मदद से सटीकता ज्यादा है। लिहाजा राज्य सरकार ने बीमा कंपनियों से प्रीमियम की दर कम करा ली। प्राप्त जानकारी अनुसार मप्र में वर्ष 2019 में 28.12 लाख किसानों ने 114 लाख हैक्टेयर फसल का बीमा कराया था। तब प्रीमियम की राशि 3970.88 करोड़ रुपए थी। ऐसे में कुल छह हजार करोड़ से अधिक के क्लेम का भुगतान किया गया। लेकिन 5 साल में फसलों का बीमा करने वाले किसान 2.33 लाख घटकर 25.79 लाख ही रह गए हैं। वर्ष 2019 में फसल बीमा क्लेम 6055 करोड़ रहा जो अब घटकर 755 करोड़ रह गया है। मप्र में 2023 में 25.79 लाख किसानों ने 89.68 लाख हैक्टेयर फसल का बीमा कराया था। इसमें खरीफ के क्लेम का भुगतान किसानों को हो गया है।

चौथे चरण में 96 सीटों पर मतदान

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में 13 मई को 10 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की 96 सीटों पर मतदान हुआ। आंध्रप्रदेश की सभी 25 लोकसभा सीटों और विधानसभा की 175 सीटों पर भी वोट डाले गये। ओडिशा की 146 विधानसभा सीटों में से 28 और 21 लोकसभा सीटों में से चार सीटों के प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला ईवीएम में बंद हो गया। तीसरे चरण तक 283 सीटों यानी 52 फीसदी सीटों पर मतदान पूरा हो चुका और सोमवार की शाम तक 543 सीटों में से 379 यानी 70 फीसदी सीटों पर मतदान की प्रक्रिया पूरी हो गई। तेलंगाना की सभी 17 सीटों के अलावा बिहार की पांच, झारखंड की चार, मध्यप्रदेश की आठ, महाराष्ट्र की 11, उत्तरप्रदेश की 13, पश्चिम बंगाल की 8 और श्रीनगर में मतदान हुआ। मध्यप्रदेश में अंतिम चरण का भी मतदान पूरा हो गया।

चुनाव में कम मतदान-किसानों की नाराजगी

(मुख्य संवाददाता)

देशभर में इस समय लोकसभा चुनाव का दौर चल रहा है। अप्रैल से शुरु हुआ मतदान अब तक लगभग आधा हो चुका है। विभिन्न राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों को मिलाकर 56 प्रतिशत वोटिंग हो चुकी है। 1 जून 2024 को अंतिम मतदान होगा। जिन राज्यों में अभी मतदान नहीं हुआ है उनमें मई एवं जून में मतदान कराया जायेगा। चुनाव परिणाम 4 जून को आना है। कई प्रमुख नेताओं का भाग्य ईवीएम में कैद हो चुका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं कांग्रेस नेता राहुल गांधी का भाग्य भी शीघ्र ही ईवीएम में सुरक्षित हो जायेगा। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में कम मतदान सभी को चिंतित करने वाला है। अधिकांश राज्यों में वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार 5 से 10 फीसदी कम मतदान हुआ है। कई स्थानों पर वोटिंग प्रतिशत 50 प्रतिशत से भी कम है। चुनावों के पहले एवं चुनावों

के दौरान अधिक से अधिक मतदान की निर्वाचन आयोग की सारी अपीलें धरी की धरी रह गई। इस बार के चुनाव में युवा, महिला, पुरुष, बुजुर्ग, व्यवसायी, किसान एवं कर्मचारी सभी दूरी बनाते हुए दिखे। किसी भी दल के समर्थन में खुलकर मतदाता सामने नहीं दिखे। जनता का समर्थन जिसे भी मिलेगा मन मारकर ही मिलेगा। उत्साह के साथ आधी से अधिक आबादी ने मतदान नहीं किया। इस दौरान मैंने स्वयं कई स्थानों पर मतदाताओं का मन टटोलने का प्रयास किया लेकिन किसी ने खुलकर नहीं बताया। दबी जुबान से मतदाताओं ने मन को मसोसकर बेमन मतदान किया।

क्यों नाराज है अन्नदाता?

देश के बहुसंख्यक किसान इस बार के चुनाव में पंक्ति में काफी पीछे नजर आए। पूछने पर पता चला कि सरकार की कथनी और करनी से अन्नदाता नाराज है। किसानों के लिये जो भी योजनाएं संचालित हैं वे चुनिंदा किसानों को ही मिल रही हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना एवं सूक्ष्म सिंचाई योजनाएं सिर्फ कागजों पर हैं। इन योजनाओं का लाभ वास्तविक किसानों को नहीं मिल रहा। मध्यप्रदेश राज्य की बात करें तो किसानों के साथ छलावा किया गया। नवंबर 2023 में सम्पन्न विधानसभा चुनाव के दौरान सत्तारुढ़ भाजपा सरकार ने किसानों से 2700 रुपये क्विंटल गेहूं एवं 3100 रुपये क्विंटल में धान खरीदने का वायदा किया था। सत्ता मिलने के पश्चात पार्टी अपने वायदे से मुकर गई। यह कहते हुए कि घोषणा पत्र पांच साल के लिये होता है। मात्र 125 रुपये क्विंटल बोनस देकर 2400 रुपये प्रति क्विंटल में गेहूं खरीदा जा रहा है। सरकारी खरीदी केन्द्रों पर गेहूं बेचने से किसान कतरा रहे हैं क्योंकि उन्हें समर्थन मूल्य से ज्यादा बाजार भाव मिल रहा है। किसानों की कई ऐसी समस्याएं हैं जिन पर राज्य सरकार ध्यान नहीं दे रही है। इन्हीं समस्याओं ने किसानों को मतदान से दूर रखा। किसानों को पता है कि वोट के खातिर सभी दल प्रलोभन देते हैं लेकिन सत्ता मिलने के बाद वायदे से मुकर जाते हैं। गुना जिले के राघौगढ़ के किसान प्रदीप सिंह रघुवंशी कहते हैं कि धनिया की पूरी फसल ओलावृष्टि से खराब हो गई अब तक एक रुपया मुआवजा नहीं मिला। इसलिये इस बार वोट डालने नहीं गये। सतना जिले के सिंहपुर के युवा किसान राजेश पटेल ने पूरी अरहर विपरीत मौसम के कारण खराब हो गई। उत्पादन लागत तक नहीं निकली। सरकार से कोई मदद नहीं मिली। पूरे परिवार ने चुनाव का बहिष्कार किया। सागर जिले के मालथौन निवासी राकेश जैन हितग्राही योजनाओं का लाभ न मिलने से नाराज हैं। ऐसे लाखों किसान हैं जिन्होंने सरकार के प्रति नाराजगी व्यक्त करते हुए मतदान का बहिष्कार किया।

लगातार कम हो रहा मतदान लोकतंत्र के लिये ठीक नहीं है। इसके प्रति मतदाता एवं जन-प्रतिनिधि दोनों को जवाबदेह बनने की जरूरत है। मतदाता को उसका हक एवं मूलभूत सुविधाओं से वंचित नहीं किया जा सकता। मतदान का अधिकार भारतीय प्रजातंत्र की सबसे बड़ी ताकत है, इसकी गरिमा को बनाये रखना सबकी अहम जिम्मेवारी है।

आयुक्त कृषि ने किया मूंग फसल का अवलोकन

पराली प्रबंधन के लिये नवाचार अपनाने की जबलपुर जिले की तारीफ

जबलपुर। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग के आयुक्त सह संचालक एम. शैल्वेंद्रम ने जबलपुर प्रवास के दौरान आज शहपुरा विकासखंड के ग्राम किसरोद में कृषक कैलाश पटेल द्वारा हैप्पी सीडर के माध्यम से की गई मूंग की बोनी का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने पराली प्रबंधन योजना के तहत जबलपुर जिले में किये जा रहे इस नवाचार की जमकर तारीफ की तथा ज्यादा से ज्यादा किसानों को इसे अपनाने के लिये प्रेरित करने पर जोर दिया। जबलपुर जिला हैप्पी सीडर से ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई के मामले में प्रदेश में अव्वल है।

कृषि अधिकारियों द्वारा किये जा रहे प्रयासों से यहां कई किसानों ने गेहूं कटने के बाद नरवाई जलाये बिना हैप्पी सीडर से ग्रीष्मकालीन मूंग और उड़द की बुवाई की है। आयुक्त कृषि श्री शैल्वेंद्रम इस नवाचार का अवलोकन करने जबलपुर पहुँचे थे। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग भोपाल के संयुक्त संचालक जी.एस. चौहान भी उनके साथ थे।

श्री शैल्वेंद्रम को कृषक कैलाश पटेल ने बताया कि हैप्पी सीडर मशीन से मूंग की बोनी करने पर पूर्व में लगने वाले समय से लगभग सात दिनों की बचत हुई है और बीज भी कम मात्रा में लगा है। पहले फसल को हर सप्ताह पानी देना होता था लेकिन अब पंद्रह दिन में एक बार खेत की सिंचाई करनी पड़ती है।

इस अवसर पर परियोजना संचालक आत्मा डॉ. एस.के. निगम ने बताया कि हैप्पी सीडर द्वारा बोनी करने से भूमि में एक्टीनोमाइटिज एवं अन्य लाभदायक जीवों की संख्या में वृद्धि होती है और कीट रोग का प्रकोप भी कम हो जाता है।

उन्होंने बताया कि हैप्पी सीडर से बुआई से पूर्व में ली गई फसल के अवशेष अगली फसल के लिये जैविक खाद का काम करते हैं। उप संचालक कृषि रवि आम्रवंशी ने कृषक कैलाश पटेल के खेत में डाले गये कंट्रोल प्लाट से प्रदर्शन प्लाट का अंतर दिखाते हुए तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। फसल अवलोकन के दौरान सहायक संचालक कृषि कीर्ति वर्मा, वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी रजनीश दुबे, मेघा अग्रवाल, एस.के. परतेती, रोहित गुप्ता सहित बड़ी संख्या में आसपास के किसान उपस्थित रहे।

64 हजार 872 मीट्रिक टन गेहूं उपार्जित

कटनी। जिले में रबी उपार्जन वर्ष 2024-25 के अंतर्गत स्थापित कुल 85 गेहूं खरीदी केन्द्रों के माध्यम से 44 हजार 290 पंजीकृत किसानों में से अब तक 10 हजार 576 पंजीकृत किसानों से समर्थन मूल्य 2400 रुपये मूल्य पर पर 64,872 मीट्रिक टन गेहूं की खरीदी की जा चुकी है। खरीदी का 27 प्रतिशत 42 करोड़ रुपये का भुगतान भी कृषकों को उनके खाते में किया जा चुका है। जिले में अब तक 17,564 कृषकों द्वारा स्लॉट की बुकिंग की जा चुकी है।

जिला आपूर्ति अधिकारी सज्जन सिंह परिहार ने बताया कि उपार्जन कार्य के दौरान गोदाम स्तरीय 32 उपार्जन केन्द्रों से 24,784 मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया जाकर 21,496 मीट्रिक टन गेहूं का परिवहन भी किया जा चुका है। जबकि समिति स्तरीय 53 उपार्जन केन्द्रों में 40,088 मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया जाकर 32,660 मीट्रिक टन का परिवहन किया जा चुका है। कलेक्टर अवि प्रसाद के निर्देश पर राजस्व, खाद्य विभाग के अधिकारियों द्वारा निरन्तर भ्रमण कर खरीदी केन्द्रों में कार्य का जायजा लिया जा रहा है।

अमानक किस्म के धान बीज के क्रय-विक्रय पर प्रतिबंध

9 बीज कंपनियों के धान बीज अमानक घोषित

सतना। उप संचालक कृषि विकास मनोज कश्यप ने बताया कि 9 बीज कंपनियों की धान किस्म के बीज को अमानक स्तर का घोषित करते हुये जिले में इसके क्रय-विक्रय को प्रतिबंधित किया गया है। इनमें वायर बायो साइंस प्राइवेट लिमिटेड महाराष्ट्र के बीज किस्म अराइज गोल्ड टीएल, अराइज तेज गोल्ड टीएल, अराइज गोल्ड 6444, इंडोग्रीन क्रॉप साइंस आगरा का अदिति गोल्ड टीएल, महिको प्रा.लि. महाराष्ट्र के एमआरपी 55 आर95 टीएल एवं कोरटेवा एग्री साइंस सीड्स प्रा.लि. हैदराबाद के बीज किस्म 27पी36 टीएल के भंडारण और क्रय-विक्रय पर रोक लगाई गई है। इसके अलावा बजाज एग्री सीड्स हैदराबाद के बीज किस्म 8ए5-13 टीएल, दिव्या 7444 टीएल, बापना सीड्स हैदराबाद के बीज किस्म रुबल-4021 टीएल, सिजेंटा इंडिया प्रा.लि. कंपनी महाराष्ट्र का एनके-5251 टीएल और यज्ञन्ती एग्रोटेक प्रा.लि. कंपनी हैदराबाद के धान किस्म भारती-211 टीएल को अमानक घोषित किया गया है।

श्री कश्यप ने जिले के सभी बीज विक्रेताओं को आगाह किया है कि अमानक घोषित किये गये बीज का भंडारण अथवा क्रय-विक्रय नहीं किया जाये।

निर्देशों का उल्लंघन करने पर बीज अधिनियम 1966 तथा बीज नियंत्रण आदेश 1983 के तहत कार्यवाही की जायेगी। इसके साथ ही उप संचालक ने जिले के समस्त बीज निरीक्षक, वरिष्ठ कृषि विस्तार अधिकारी को निर्देशित किया है कि निजी अथवा सहकारी बीज विक्रेताओं के प्रतिष्ठानों या गोदामों में अमानक घोषित किये गये बीज किस्मों का भंडारण एवं क्रय-विक्रय न हो। इसका उल्लंघन करने पर संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जाये।

आईसेक्ट का एमएस वर्ड पर विशेष प्रशिक्षण

भोपाल। आईसेक्ट के लर्निंग एंड डेवलपमेंट/ कॉर्पोरेट एचआर ने अपने फैकल्टीज और कर्मचारियों के लिए माइक्रोसॉफ्ट वर्ड दक्षता पर केंद्रित दो दिवसीय विशेष प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया। प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रतिभागियों को एमएस वर्ड की उपयोगी एवं महत्वपूर्ण कमांड्स से परिचित कराते हुए उनकी कार्यक्षमता को बढ़ाना है।

इस दौरान आईसेक्ट पीएमकेके भोपाल की विशेषज्ञ प्रशिक्षक अंकिता राजोरिया ने विशेषज्ञता और कुशलता के साथ प्रशिक्षण सत्र का नेतृत्व किया। उनके मार्गदर्शन में आईसेक्ट कार्यालय, आरएनटीयू, एसजीएसयू, पीएमकेके और स्कोप स्कूल के लगभग 40 प्रतिभागी सक्रिय रूप से ऑफलाइन और ऑनलाइन तरीके से जुड़ें एवं एमएस वर्ड की बारीकियों को समझा।

प्रशिक्षण में एमएस-वर्ड के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई, जिसमें उन कमांड्स पर विशेष जोर दिया गया जिनकी लोगों को कम जानकारी होती है परंतु वे प्रोडक्शन और डॉक्यूमेंटेशन में प्रोफिशिएंसी को बढ़ाती हैं। इंटरैक्टिव सत्रों और प्रैक्टिकल डेमोन्स्ट्रेशन के माध्यम से प्रतिभागियों ने बेहतर वर्क फ्लो और डॉक्यूमेंट मैनेजमेंट के लिए अपने एमएस-वर्ड उपयोग को अनुकूलित बनाने से संबंधित कई जानकारियां प्राप्त की।

इस पहल पर बात करते आईसेक्ट के निदेशक डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी ने कहा एमएस-वर्ड प्रशिक्षण सत्र निरंतर सीखने और कौशल विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है। इस दौरान प्रतिभागियों ने एमएस-वर्ड फंक्शन्स के व्यापक कवरेज और अपने कौशल को बढ़ाने के लिए मिले इस प्रशिक्षण सत्र की प्रशंसा की और उन्हें इस अवसर को प्रदान करने के लिए आईसेक्ट के एल एंड डी/कॉर्पोरेट मानव संसाधन विभाग की सराहना की।

विदिशा विनोवर फैक्ट्री

139-दुर्गा चौक तलैया, विदिशा (म.प्र.) फोन : 07592-232665 मो. : 9827215862

निर्माता - उड़ावनी मशीन, विदिशा ग्रेन (ग्रेडिंग मशीन), सुरक्षा रोलिंग शटर, ट्राली, कल्टीवेटर, ट्रैक्टर चलित पंप एवं अल्टिनेटर हाइड्रा डोजर, बोनी मशीन बैल चलित एवं अन्य कृषि उपकरण।

भूसा पंखा

उड़ावनी मशीन ग्रेडिंग सिस्टम हस्त चलित P.T.O. डॉयर एवं लिफ्ट

सीड ग्रेडर महावली ब्रश मॉडल सीड ग्रेडर (चार साइज में उपलब्ध)

गौरव मॉडल सीड ग्रेडर

E-mail : vidisha.factory@gmail.com Web.: facebook.com/vidishavinoberfactory

खेती में 1 रुपये के निवेश पर 13.85 रुपये का फायदा

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की कृषि शोध का खुलासा

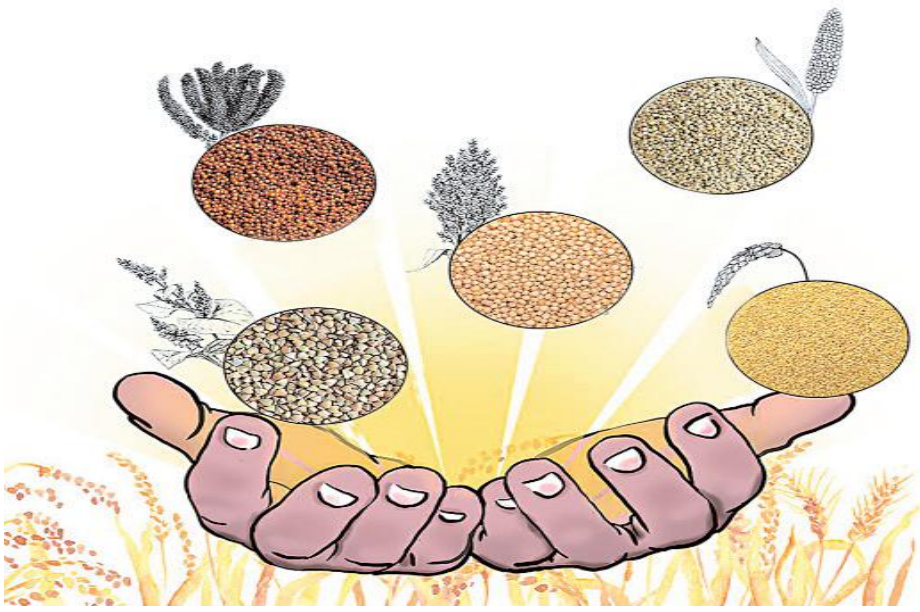

नई दिल्ली। कृषि में शोध पर प्रत्येक रुपये के खर्च से 13.85 रुपये का रिटर्न मिलता है। यह कृषि से जुड़ी अन्य गतिविधियों से मिलने वाले लाभ से कहीं अधिक है। यह खुलासा हाल ही में जारी एक अध्ययन रिपोर्ट से हुआ है। गौरतलब है कि साल 2012 से 2022 के बीच कृषि शोध पर निवेश लगातार घटा है। यह वर्किंग पेपर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय कृषि अर्थशास्त्र और नीति अनुसंधान संस्थान (एनआईएपी) में पिछले महीने छपा है।

मप्र में कृषि शोध पर जीडीपी का मात्र 0.25 प्रतिशत खर्च

इस रिपोर्ट में कहा गया है कि खाद्य एवं अन्य कृषि उत्पादों की बढ़ती मांग तथा कृषि भूमि के विस्तार की बहुत कम संभावनाओं को देखते हुए कृषि उत्पादों के उत्पादन को लेकर भविष्य की चुनौतियों के मद्देनजर यह जरूरी है कि कृषि शोध पर अधिक से अधिक खर्च किया जाए। यही नहीं, खेती से जुड़े अन्य क्षेत्रों से अधिक से अधिक आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय लाभ उठाने के लिए प्राथमिकता के आधार पर इनमें काम करने की जरूरत है।

शोध के बाद कृषि से जुड़ी अन्य गतिविधियों में सबसे अधिक एक रुपये के निवेश पर 7.40 रुपये का लाभ मिलता है। व्यापक कृषि और इससे जुड़ी गतिविधियों के बारे में पेपर में कहा गया है कि कृषि संबंधी निचले स्तर की गतिविधियों में निवेश पर मिलने वाले रिटर्न में भारी भिन्नता पाई गई है।

पशु विज्ञान शोध पर प्रत्येक एक रुपये के निवेश पर 20.81 रुपये का लाभ अर्जित होता है जबकि पूरे फसल विज्ञान क्षेत्र से केवल 11.69 रुपये का रिटर्न ही मिलता है। इसके अलावा इस अध्ययन में यह भी पाया गया है कि कृषि शोध पर निवेश में अलग-अलग जगहों पर भी अंतर दिखता है। अध्ययन से पता चलता है कि वर्ष 2011-2020 के बीच देश का कुल 43 फीसदी बुवाई क्षेत्रफल कवर करने वाले ओडिशा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश ने शोध कार्यों पर अपनी कृषि जीडीपी का 0.25 प्रतिशत से भी कम खर्च किया।

दूसरी ओर जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, केरल और असम ने अपनी कृषि जीडीपी का 0.80 फीसदी से अधिक खर्च किया। अध्ययन से यह भी पता चला कि ज्यादातर शोध केवल फसलों से संबंधित ही रहा। पशुधन और प्राकृतिक संसाधनों पर अपेक्षाकृत कम खर्च किया गया। वैसे दक्षिणी राज्यों में हर क्षेत्र में निवेश काफी संतुलित नजर आता है।

भारत में कृषि शोध और विकास पर निवेश मुख्यत: सार्वजनिक स्तर पर होता है। वर्ष 2011 से 2020 के बीच केंद्र और राज्य सरकारों ने शोध पर कुल निवेश का क्रमश: 33.8 फीसदी और 58.5 फीसदी योगदान किया, जबकि निजी क्षेत्र की भागीदारी केवल 8 फीसदी ही रही। हाल के वर्षों में यह बढ़ी जरूर है, परंतु अभी भी यह वैश्विक औसत से कम ही है।

भारत ने वर्ष 2011 से 2020 के बीच शोध पर अपनी कृषि जीडीपी का 0.61 फीसदी खर्च किया है। यह वैश्विक औसत (0.93 फीसदी) का दो-तिहाई है। कृषि के साथ विस्तारित सेवाओं पर कृषि जीडीपी का खर्च मात्र 0.16 फीसदी ही रहा। वर्ष 2020-21 में भारत ने शोध पर कृषि जीडीपी का 0.54 फीसदी खर्च किया जबकि विस्तारित गतिविधियों पर यह खर्च 0.11 फीसदी रहा।

पिछले चार दशक में भारत में कृषि शोध और विकास पर निजी एवं सार्वजनिक निवेश लगभग पांच गुना बढ़ा है। इस क्षेत्र में 2011 से 2020 के बीच वार्षिक वृद्धि 4.4 फीसदी दर्ज की गई। वर्ष 1981 से 1990 के बीच यह वृद्धि दर 6.4 फीसदी दर्ज की गई थी।

लोकसभा चुनाव में तीसरे चरण में 67% मतदान

अंतिम चरण की 8 सीटों पर 13 को हुई वोटिंग

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण में 11 राज्यों व केन्द्र शासित प्रदेशों की 93 सीटों पर कुल 65.68 प्रतिशत मतदान हुआ। वहीं मध्यप्रदेश में तीसरे चरण में डाले गये वोटों का प्रतिशत 66.79 प्रतिशत रहा। प्रदेश की 9 सीटों पर 7 मई को हुये मतदान में दूसरे चरण की तुलना में 8.15 प्रतिशत अधिक मतदान हुआ।

भोपाल में 64.06 प्रतिशत मतदान हुआ जो वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव से 1.59 प्रतिशत कम है। बैतूल के 4 पोलिंग बूथों पर 10 मई को दोबारा मतदान कराया गया। दूसरे चरण में प्रदेश की मुरैना, भिंड, ग्वालियर, गुना, सागर, विदिशा, भोपाल एवं राजगढ़ में वोट डाले गये।

13 मई को 8 सीटों के लिये अंतिम चरण का मतदान देवास, उज्जैन, मंदसौर, रतलाम, धार, इंदौर, खरगौन एवं खंडवा में संपन्न हुआ।

दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर

मध्य प्रदेश से चुनाव लड़ रहे कई दिग्गजों की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। दो पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान विदिशा एवं दिग्विजय सिंह राजगढ़ का भाग्य ईवीएम में कैद हो गया। केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया गुना से चुनाव लड़ रहे हैं। पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं विधायक कांतिलाल भूरिया झाबुआ से भाग्य आजमा रहे हैं। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वी.डी. शर्मा एवं कई अन्य प्रमुख नेता अपने-अपने क्षेत्रों से चुनाव लड़कर जीत की प्रत्याशा लगाये बैठे हैं। जनता ने आशीर्वाद किसे दिया है यह पता 4 जून को चलेगा।

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

मनुष्य अपने विचारों की उपज मात्र है, वह जैसा सोचता है, वैसा ही हो जाता है। – महात्मा गांधी

चिंताजनक है कृषि शोध में घटता निवेश

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की एक अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक देश में कृषि शोध पर निवेश लगातार घटता जा रहा है। वर्ष 2011 से वर्ष 2020 के दौरान कृषि क्षेत्र की जीडीपी का कुल निवेश 1 प्रतिशत से भी कम है। अध्ययन रिपोर्ट में निष्कर्ष सामने आया है कि आमदनी की दृष्टि से कृषि क्षेत्र सबसे मजबूत है। एक रुपये के निवेश पर कृषि क्षेत्र 13.85 रुपये रिटर्न देने की क्षमता रखता है। गौरतलब है कि देश के कुल खाद्यान्न उत्पादन में 43 प्रतिशत हिस्सा रखने वाले मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, राजस्थान जैसे राज्यों में कृषि शोध निवेश 0.25 प्रतिशत है। जो अत्यधिक चिंताजनक है। देश के दक्षिणी राज्यों में जहां फसल विविधता का वर्चस्व नाममात्र का होने के बावजूद वहां पर कृषि शोध में निवेश अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर है। यदि 10 वर्ष पहले के कृषि शोध पर नजर डालें तो खाद्यान्न उत्पादन कम होने के बावजूद निवेश बेहतर था। इसमें तकरीबन 2 से 3 प्रतिशत का अंतर है। खाद्यान्न उत्पादन में अग्रणी दुनिया के अन्य देशों की स्थिति कृषि शोध निवेश पर भारत से कहीं बेहतर है। कृषि शोध निवेश के मामले में देश का निजी क्षेत्र भी पीछे है। किसानों को खाद, बीज, कीटनाशक, कृषि यंत्र के साथ अन्य नवाचार उपलब्ध करवाने वाला निजी क्षेत्र (प्रायवेट सेक्टर) एग्री रिसर्च निवेश के मामले में फिसड्डी है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की यह रिपोर्ट ऐसे समय पर आयी है जब भारत खाद्यान्न उत्पादन के मामले में अग्रणी देश बनने की ओर अग्रसर है। ऐसे समय पर कृषि शोध निवेश में कमी सरकार के लिये खतरे की घंटी है। बढ़ती आबादी के लिये खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाना गंभीर चुनौती है। इसके लिये कथनी और करनी दोनों को पारदर्शी बनाना होगा। एग्रीकल्चर रिसर्च पर निवेश बढ़ाकर उत्पादकता वृद्धि पर ध्यान देने की जरूरत है। खेती के नवीन नवाचारों को किसानों तक पहुंचाने की जरूरत है। कृषि शोध के लिये कृषि शिक्षा को सबसे बेहतर बनाना होगा जो वर्तमान में दयनीय स्थिति में है। रिसर्च कार्य से जुड़े युवा कृषि वैज्ञानिकों की भारी कमी है। युवा कृषि शोधार्थी ही इस कार्य को बढ़ाने का काम कर सकते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के लिय कृषि क्षेत्र हमेशा से ही सुरक्षित रहा है। कोविड संक्रमण के दौरान कृषि क्षेत्र ही एकमात्र ऐसा क्षेत्र रहा जिसने अर्थव्यवस्था को संभालने का काम किया है। भारतीय कृषि ने हमेशा से ही देश को गौरवान्वित करने का कार्य किया है। एक समय था जब हमारे देश में अमेरिका से गेहूं मंगाया जाता था। वर्तमान मे कई देशों को हम खाद्यान्न आपूर्ति कर रहे हैं। यह सब संभव हआ है किसानों एवं कृषि वैज्ञानिकों की अथक मेहनत के कारण। इसे बरकरार रखने के लिये कृषि शोध के निवेश पर अत्यधिक ध्यान देने की जरूरत है।

पांच दिवसीय प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण

मंडला। मध्यप्रदेश ग्रामीण डे आजीविका मिशन बीजाडांडी के द्वारा कृषि सखियों का प्राकृतिक खेती को लेकर प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमें बीजाडांडी एवं निवास ब्लॉक की 60 कृषि सखियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण के दौरान कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती के उद्देश्य, लाभ, महत्व, प्रणालियों, विधियों, एकीकृत कृषि प्रणाली, मिट्टी एवं उसके पोषक तत्व, जैव उत्पाद, जैव प्रमाणीकरण, मार्केटिंग के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण में कृषि विभाग एवं बागवानी विभाग के अधिकारीगण भी उपस्थित हुए और उनके द्वारा बहुमूल्य जानकारी उपलब्ध कराई गई। इस प्रशिक्षण के दौरान कृषि सखी को जैव उत्पाद बनाने के तरीका प्रदर्शन के माध्यम से भी समझाया गया।

विश्व सौर उर्जा दिवस का आयोजन

रीवा। कृषि महाविद्यालय रीवा में विश्व सौर उर्जा दिवस मनाया गया, जिसमें डा. एस.के. त्रिपाठी अधिष्ठाता के द्वारा सौर उर्जा के संबंध में समझाते हुए जीवन में उसकी महत्ता एवं उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। महाविद्यालय के प्राध्यापक डा. एस.एम. कूर्मवंशी तथा तकनीकी सहायक डा. सुधांशु पाण्डेय, डा. गुफरान उस्मानी एवं अन्य तकनीकी पदाधिकारियों की उपस्थिति रही। एन.सी.सी प्रभारी डा. आर.के. तिवारी ने सौर उर्जा के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन एवं उद्बोधन डा. मनीषा द्विवेदी एन.एस.एस. प्रभारी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में स्नातक के तृतीय, चतुर्थ वर्ष के सभी छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

जैविक खेती की प्रायोगिक परीक्षाएं संपन्न

कटनी। शासकीय महाविद्यालय विजयराघवगढ़ में उच्च शिक्षा विभाग द्वारा नई शिक्षा नीति के अंतर्गत व्यवसायिक शिक्षा के तहत स्वरोजगार स्थापित करने के लिए शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को जैविक खेती का प्रशिक्षण दिया गया। प्राचार्या डॉ. सुषमा श्रीवास्तव के मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. सुमन पुरवार के सहयोग से जैविक कृषि विशेषज्ञ रामसुख दुबे द्वारा पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के पश्चात विद्यार्थियों की लिखित एवं मौखिक परीक्षा बाह्य परीक्षक अश्विनी कुमार गर्ग एवं आंतरिक परीक्षक रामसुख दुबे द्वारा स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की ली गई। परीक्षा संपन्न कराने में कॉलेज के स्टाफ ने सहयोग प्रदान किया। विभाग के निरंतर प्रयासों से विगत कुछ वर्षों से छात्रों में जैविक खेती विषय को अध्ययन के लिए चुनाव करने से विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है।

कृषि उपज मंडी में किसानों के बीच पहुंचे कलेक्टर

किसानों से की विस्तार से बातचीत

कटनी। कलेक्टर अवि प्रसाद ने कृषि उपज मंडी पहरूआ पहुंचकर यहां उपज बेचने आए किसानों से मुलाकात की। कलेक्टर ने किसानों से मंडी में उपलब्ध सुविधाओं और व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने किसानों से कहा कि यहां मंडी में उन्हें फसल बेचने में किसी भी प्रकार की आढ़तियों और अन्य किसी मंडी कर्मचारी से किसी भी प्रकार की दिक्कत या शिकायत हो तो अवश्य बतायें। उन्होंने किसानों से मंडी में पेयजल और प्रसाधन आदि की समुचित व्यवस्था भी पूंछी।

श्री प्रसाद ने किसानों से खेती के लिए समय पर उर्वरक और बीज की उपलब्धता सहित फसल उत्पादन के संबंध में भी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने किसानों से पूछा कि इस साल उनके क्षेत्र में सबसे अच्छी फसल किस अनाज की हुई है।

किसानों ने बताया कि गेहूं के अलावा चना और मसूर की भी फसल ठीक रही। श्री प्रसाद ने किसानों से जानकारी ली कि वे कौन सी फसल लेकर यहां आए हैं।

यहां गेहूं की फसल लेकर पहुंचे किसान से कलेक्टर ने कहा कि उपार्जन केंद्र में क्यों नहीं ले गए। इस पर किसान द्वारा बताया गया कि यहां मंडी में मुझे उपार्जन केन्द्र से ज्यादा मूल्य मिल रहा है, इसलिए मंडी में फसल लेकर आया हूं। इस दौरान तहसीलदार कटनी शशिभूषण सिंह मौजूद रहे।

अनमोल वचन

मुंह तक भरे घड़े से आवाज नहीं निकलती, आधा भरा घड़ा ही आवाज करता है। – सुभाषित

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

बैशाख शुक्ल/ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष विक्रम संवत 2081 ईस्वी सन् 2024

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
14 मई 24	मंगलवार	बैशाख शुक्ल-07	
15 मई 24	बुधवार	बैशाख शुक्ल-07	
16 मई 24	गुरुवार	बैशाख शुक्ल-08	
17 मई 24	शुक्रवार	बैशाख शुक्ल-09	
18 मई 24	शनिवार	बैशाख शुक्ल-10	
19 मई 24	रविवार	बैशाख शुक्ल-11	मोहिनी एकादशी
20 मई 24	सोमवार	बैशाख शुक्ल-12	प्रदोष व्रत
21 मई 24	मंगलवार	बैशाख शुक्ल-13	
22 मई 24	बुधवार	बैशाख शुक्ल-14	
23 मई 24	गुरुवार	बैशाख शुक्ल-15	पूर्णिमा
24 मई 24	शुक्रवार	ज्येष्ठ कृष्ण-01	
25 मई 24	शनिवार	ज्येष्ठ कृष्ण-02	नवतपा प्रारंभ
26 मई 24	रविवार	ज्येष्ठ कृष्ण-03	
27 मई 24	सोमवार	ज्येष्ठ कृष्ण-04	

ग्रीष्मकालीन मूंग में एकीकृत कीट प्रबंधन

● ब्रजेश कुमार नामदेव
● राजेंद्र पटेल ● संजीव कुमार गर्ग
● देवीदास पटेल ● पंकज शर्मा
कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर, नर्मदापुरम (म.प्र.)

गर्मियों में किसान बंधु मूंग को एक नगदी फसल के रूप में उगाते हैं जो बहुत ही कम अवधि लगभग 60 से 65 दिन अवधि की होती जिसमें कम समय में अधिक उत्पादन प्राप्त कर अतिरिक्त लाभ कमाते हैं।

वर्तमान में इस कम अवधि की फसल में भी विभिन प्रकार के हानिकारक कीट नुकसान करने के साथ उत्पादन में कमी के साथ-साथ इनके प्रबंधन में उत्पादन लागत में वृद्धि करते हैं किन्तु यदि किसान भाई इन हानिकारक कीटों के प्रबंधन हेतु एकीकृत कीट प्रबंधन को अपनाते हैं तो कीट व्याधि का प्रकोप भी कम होगा एवं उत्पादन लागत कम होने के साथ कीटनाशकों का प्रयोग भी कम किया जा सकता है।

सफेद मक्खी : इस कीट का प्रकोप पौधे की प्रारंभिक अवस्था से ही शुरू हो जाता है जो कि फसल की हरी अवस्था तक प्रकोप करता रहता है। शिशु एवं वयस्क कीट पौधे से रस चूसते हैं। अत्यधिक गंभीर प्रकोप में पत्तियां मुड़ जाती हैं। यह मक्खी पीले मोजेक वायरस रोग के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

माहू: निम्फ और वयस्कों का रंग काला होता है। शुरुआत में उनकी संख्या कम होती है लेकिन मादा सीधे बच्चों को जन्म देती है जिसके कारण उनकी संख्या बढ़ जाती है। माहू युवा शाखाओं, पत्तियों और फलियों में चिपके हुए दिखाई देते हैं। निम्फ और वयस्क कीट युवा तनों से रस चूसते हैं जिसके परिणामस्वरूप पत्तियां पीली हो जाती हैं। पौधे की वृद्धि में रुकावट आती है। अधिक संक्रमण में पौधे के ऊपरी भाग और उसकी फली मुड़ जाती है और उत्पादन और गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है। माहू के शरीर से हनीड्यू स्राव बाहर निकलता है जो पत्तियों की सतह पर चिपक जाता है। इस पदार्थ पर काली कवक बढ़ती है जिससे पूरा पौधा काला हो जाता है। पत्तियां काली हो जाने पर प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में रुकावट आ जाती है।

हरी अर्धकुण्डलाकार इल्ली: कीट की इल्ली अवस्था फसल की पत्तियां खाकर नुकसान पहुंचाती है। जिससे पत्तियों पर छोटे-छोटे छिद्र बनते हैं। तृतीय अवस्था की इल्ली के खाने से बड़े छिद्र बनते हैं। इल्लियां मोटी शिरायें छोड़कर पूर्ण पत्तियां खाती हैं। छोटी इल्ली द्वारा पत्तियों में छोटे-छोटे छेद बनाकर खाती है जबकि बड़ी इल्लियां पत्तियों पर बड़े एवं अनियमित छेद करती हैं। अधिक प्रकोप अवस्था में फसल की पत्तियों के केवल शिराएं बची रह जाती हैं।

तम्बाकू की इल्ली: कीट की नवजात इल्लियां समूह में रहकर पत्तियों का पर्ण हरित खुरचकर खाती है जिससे ग्रसित पत्तियां जालीदार हो जाती हैं जो कि दूर से ही देख कर पहचानी जा सकती है। पूर्ण विकसित इल्ली पत्ती, कली एवं फली तक को नुकसान करती है।

बिहार काम्बलिया कीट : नवजात इल्लियाँ अंड-गुच्छों से निकलकर एक ही पत्ती पर झुण्ड में रह कर पर्ण हरित खुरच कर खाती है। नवजात इल्लियां 5-7 दिनों तक झुण्ड में रहने के पश्चात पहले उसी पौधे पर एवं बाद में अन्य पौधों पर फैलकर पूर्ण पत्तियां खाती है। जिससे पत्तियाँ पूर्णत: पर्णविहीन जालीनुमा हो जाती है। इल्लियों द्वारा खाने पर बनी जालीनुमा पत्तियों को दूर से ही देख कर पहचाना जा सकता है।

फल्ली छेदक: नवजात इल्लियाँ कली, फूल एवं फल्लियों को खाकर नष्ट करती है पर फल्लियों में दाने पड़ने के पश्चात इल्लियाँ फल्ली में छेद कर दाने खाकर आर्थिक रूप से हानि पहुंचाती है।

हानिकारक कीटों के एकीकृत प्रबंधन हेतु सुझाव

- माहू के संक्रमण के साथ-साथ परभक्षी कीट, लेडी बर्ड बीटल भी देखी जाती है। इस बीटल के लार्वा और वयस्क (पीले पट्टियों के साथ काले रंग का) माहू को खाते हैं और माहू की संख्या को कम करते हैं। एक और परभक्षी कीट क्राईसोपा लार्वा भी माहू को खाते हैं। ऐसे समय में कीटनाशकों के छिड़काव नही करने चाहिए।
- पीला विषाणु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला दें।
- पीले चिपचिपे ट्रेप का उपयोग करें चाहे तो इन्हें घर पर भी बना सकते हैं। टीन की प्लेट या चादर में पीले रंग का पेंट करके उसमें ग्रीस या सरसों का तेल लगाकर उपयोग कर सकते हैं। इन्हें प्रति एकड़ 20 से 25 ट्रेप उपयोग किये जा सकते हैं।
- विभिन्न प्रकार की इल्लियों फली छेदक कीट के आकलन व प्रबंधन हेतु फेरोमोन ट्रेप 10-12 प्रति एकड़ लगाकर कीट प्रकोप का आकलन एवं उनकी संख्या कम करें। अंडे व इल्लियों के समूह को इकट्ठा कर नष्ट कर दें।
- एक सोलर लाईट ट्रेप प्रति एकड़ अवश्य लगाये जिससे विभिन्न रात्रिचर कीटों को एक साथ एकत्रित कर नष्ट किया जा सके।
- 20-25 प्रति एकड़ खूंटियां (3.5 फीट ऊँची) पक्षियों के बैठने हेतु फसल की शुरुआत से ही लगाये। जिन पर पक्षी बैठ कर इल्लियां खा सके। निरंतर फसल की निगरानी करते रहें। जब कीट की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से ऊपर होने पर सिफारिश अनुसार ही कीटनाशक का छिड़काव करें।
- जैविक कीटनाशक बोवेरिया बेसियाना 400 मिली प्रति एकड़ का उपयोग करें।
- अंड परजीवी ट्राईकोग्रामा प्रजाति का (ट्राईकोकार्ड 2.5 कार्ड प्रति एकड़) का उपयोग करना चाहिए (ट्राईकोकार्ड प्राप्त करने हेतु बायो कंट्रोल लेब कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर नर्मदापुरम में ब्रजेश कुमार नामदेव 9244182803 से संपर्क करें)।
- रस चूसक कीटों के प्रबंधन हेतु जैविक कीटनाशी वर्टिसेलियम लेकैनी का छिड़काव 400 मिली प्रति एकड़ उपयोग करें।
- रस चूसक कीटों के रासायनिक नियंत्रण हेतु कीटनाशी इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 50 मिली मात्रा या एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एस.पी.100 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ उपयोग कर सकते हैं।
- विभिन्न प्रकार की इल्लियों, फली छेदक कीटों के प्रबंधन हेतु रासायनिक कीटनाशी एमामेक्टिन बेंजोएट 5 प्रतिशत एसजी या फ्लुबेन्डीयमाईड 20 प्रतिशत की 100 ग्राम मात्रा या स्पिनेटोरम 11.7 प्रतिशत एस.सी. की 160 मिली मात्रा प्रति एकड़ का उपयोग करें।

- **यशोवर्धन सिंह**
  शोधार्थी (पादप रोग विज्ञान)
- **डॉ. मीनाक्षी आर्य**
  कृषि वैज्ञानिक (पादप रोग विज्ञान)
- **प्रियांशी गर्ग**
  तकनीकी सहायक (आईसीआरपी चना)
  रानी लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (उ.प्र.)
- **शुभम मिश्रा**
  पीएचडी स्कॉलर (पादप रोग)
  जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

मृदा स्वास्थ्य क्यों महत्वपूर्ण ? इसकी सुरक्षा कैसे करें

मिट्टी कई महत्वपूर्ण घटकों वाला एक जटिल वातावरण है- कार्बनिक पदार्थ, सूक्ष्म जीवों (रोगाणु) और खनिजों का समुदाय। स्वस्थ मिट्टी आवश्यक कार्यों को बनाए रखती है जैसे-

- जल विनियमन यह पानी का भंडारण करता है और मिट्टी के भीतर इसकी गति को नियंत्रित करता है।
- पौधे और पशु जीवन के लिए समर्थन मिट्टी जीवित जीवों की विविधता और उत्पादकता में योगदान देती है।
- प्रदूषक फिल्टरिंग खनिज और मिट्टी के सूक्ष्म जीव प्रदूषकों को फिल्टर करते हैं, जो भूजल की गुणवत्ता की रक्षा करता है।
- पोषक तत्वचक्रण मिट्टी और इसके सूक्ष्म जीव फॉस्फोरस, नाइट्रोजन और कार्बन जैसे पोषक तत्वों के भंडारण और चक्रण में भाग लेते हैं, जो पौधों के विकास के लिए आवश्यक हैं।
- भौतिक स्थिरता और समर्थन मिट्टी उन पौधों के लिए एक माध्यम है जो इसमें विकसित हो सकते हैं, लेकिन यह किसी भी मानव निर्माण के लिए एक समर्थन भी है।

इन कार्यों के रखरखाव के लिए स्वस्थ मिट्टी महत्वपूर्ण है। उनके पास आमतौर पर समृद्ध मिट्टी की जैव विविधता होती है, जिसमें कई अलग-अलग जीव शामिल होते हैं। इन जीवों में बैक्टीरिया और कवक जैसे सूक्ष्म जीव शामिल हैं, लेकिन लाभकारी कीड़े या कीड़े जैसे जानवर भी शामिल हैं। मिट्टी के जीव नाइट्रोजन जैसे पोषक तत्वों के चक्रण में सीधे योगदान करते हैं। वे कार्बनिक पदार्थों को तोड़ सकते हैं और उन्हें पोषक तत्वों में बदल सकते हैं जिन्हें पौधे अवशोषित कर सकते हैं। वे पानी के चक्रण में भी योगदान देते हैं। दूसरे शब्दों में, मिट्टी की जैव विविधता हमें भोजन और स्वच्छ पानी प्रदान करती है। स्वस्थ मिट्टी आमतौर पर अधिक उत्पादक और अधिक लचीली होती है। वे अधिक मजबूत पौधे भी पैदा करते हैं जो कीटों और रोगजनकों से लड़ सकते हैं। स्वस्थ मिट्टी भी अधिक कार्बन संग्रहित कर सकती है, जिससे जलवायु परिवर्तन कम हो सकता है। दुर्भाग्य से गहन कृषि, वानिकी और जलवायु परिवर्तन जैसे कई कारकों के कारण दुनियाभर में मिट्टी का स्वास्थ्य खतरे में है। उदाहरण के लिए एक हालिया अध्ययन का अनुमान है कि यूरोपीय संघ में 61 प्रतिशत भूमि मृदा क्षरण से प्रभावित है। भूमि के इस अनुपात में मिट्टी को अस्वस्थ माना जाता है।

मृदा निम्नीकरण

कई कारक मिट्टी के क्षरण को प्रभावित करते हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालते हैं। इनमें से कुछ हैं-

- मिट्टी का संघनन संकुचित मिट्टी में हवा, पानी और पौधों की जड़ों की आवाजाही के लिए पर्याप्त जगह नहीं होती है। भारी कृषि मशीनरी और अत्यधिक जुताई से मिट्टी संघनन हो सकती है।
- मृदा अपरदन यह मिट्टी की ऊपरी परत के बनने की गति से अधिक तेजी से नष्ट होने की प्रक्रिया है। यह परत मिट्टी का उपजाऊ भाग है और इसलिए पौधों के विकास के लिए आवश्यक है। कटाव मुख्य रूप से जुताई और वनों की कटाई के कारण मिट्टी को जलवायु परिस्थितियों के संपर्क में आने के कारण होता है।
- रासायनिक प्रदूषण रासायनिक कीटनाशक, उर्वरक और अन्य औद्योगिक रसायन मिट्टी के सूक्ष्म जीवों पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। वे मिट्टी के जीवों की मात्रा और विविधता को कम करते हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य को और अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। इनसे मिट्टी की उर्वरता में भी कमी आती है।

मिट्टी के क्षरण के परिणामस्वरूप, मिट्टी की गुणवत्ता पोषक तत्वों में खराब हो जाती है और पानी धारण करने की क्षमता खो देती है। इससे खाद्य उत्पादन में कमी आती है। सबसे खराब स्थिति में खराब मिट्टी (शेष पृष्ठ 10 पर)

खेतों और बगीचों के लिए मिट्टी के नमूने एकत्र करने की एक गाइड

- **प्रज्ञा कुर्मी,** पीएचडी स्कॉलर (मृदा विज्ञान)
  राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

मिट्टी के विश्लेषण के बिना यह बताना लगभग असंभव है कि आपकी फसल को उगाने में मदद के लिए आपकी मिट्टी को क्या चाहिए। एक प्रयोगशाला मृदा विश्लेषण या एक मृदा परीक्षण, पर्याप्त पोषक तत्वों की आपूर्ति करने के लिए आपकी मिट्टी की क्षमता के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इससे आपको उर्वरक और चूना सामग्री के सही मिश्रण का चयन करने में मदद मिलती है, जो आपकी मिट्टी को विकसित करने और बनाए रखने और फसल उत्पादन बढ़ाने में मदद कर सकता है। निम्नलिखित सिफारिशें उर्वरक प्रयोगों, मिट्टी सर्वेक्षण और खेत पर परीक्षणों से प्राप्त परिणामों पर आधारित हैं।

मिट्टी का नमूना क्यों एकत्र करना चाहिए?

- नए भूमि मालिकों के लिए मिट्टी के आधारभूत पोषक तत्व की स्थिति जानने हेतु।
- पोषक तत्व अनुप्रयोग सिफारिशें निर्धारित करने के लिए।
- पीएच का आकलन करने के लिए।
- समय के साथ मिट्टी की पोषक तत्व स्थिति में परिवर्तन को मापें।
- प्रमाणन आवश्यकताओं के लिए मृदा पोषक तत्व प्रबंधन का दस्तावेजीकरण करें।
- अत्यधिक पोषक तत्वों के प्रयोग या घुलनशील नमक के संचय हेतु।
- किसी खेत के भीतर संभावित परिवर्तनीय-दर उर्वरक के लिए एक योजना विकसित करने हेतु।

मिट्टी का नमूना कब एकत्र करना चाहिए?

- सर्वोत्तम समय फसल बोने से एक माह पहले।
- मिट्टी के 2 नमूने आमतौर पर फसल 1 की कटाई और फसल 2 की बुआई के बीच एकत्र किए जाते हैं।

- कृषि फसलो के लिए जब खेत फसल से खाली हो नमूने एकत्र करें।
- बागवानी फसलों के लिए शरद ऋतु में।
- बारहमासी फसलों में विकास की नई लहर से पहले।

कितनी बार मिट्टी का नमूना एकत्र करना चाहिए?

पौधों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालने से पहले संभावित पोषक तत्व प्रबंधन मुद्दों को पहचानने के लिए मिट्टी का अक्सर पर्याप्त विश्लेषण किया जाना चाहिए। सामान्य तौर पर, वार्षिक फसलों, चरागाहों और फलियों के लिए हर 2 से 3 साल में परीक्षण करें और क्रिसमस पेड़ों, फलों और अखरोट के पेड़ों, जामुन और अंगूरों के लिए हर 3 से 5 साल में परीक्षण करें। साल के एक ही समय में नमूने लें ताकि परिणाम साल-दर-साल तुलनीय हों।

मिट्टी का नमूना कहाँ से एकत्र करना चाहिए?

जिस क्षेत्र से मिट्टी का नमूना एकत्र करना है वह मिट्टी के प्रकार, स्थलाकृति, उगाई गई फसलों, प्रबंधन इतिहास या उपरोक्त सभी पर निर्भर हो सकता है। उदाहरण के लिए, चित्र 1 में खेत में तीन अलग-अलग नमूना क्षेत्र हैं- ए (बगीचा), बी (चारागाह), और सी (सब्जी पंक्ति वाली फसलें)। इस उदाहरण में, तीनों क्षेत्रों में से प्रत्येक से एक अलग मिट्टी का नमूना एकत्र किया जाना चाहिए। यही अवधारणा छोटी एकड़ भूमि पर भी लागू होती है। उदाहरण के लिए, एक लॉन और एक सब्जी उद्यान प्रत्येक का अलग-अलग नमूना लिया जाना चाहिए।

मिट्टी का नमूना कैसे एकत्र करूं?

- परिधि पर नमूने एकत्र न करें। संदूषण की संभावना है क्योंकि उर्वरक की थैलियां वहां रखी जाती हैं, जानवर और अन्य मनुष्य परिधि से गुजरते हैं।
- कभी भी लाइन में लगकर सैंपल न लें। इसके बजाय, जिगजैग पैटर्न में कई स्थानों पर नमूनाकरण एकरूपता सुनिश्चित करता है।

(शेष पृष्ठ 13 पर)

- **डॉ. विशाल मेश्राम,** वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं वैज्ञानिक
- **डॉ. प्रशांत श्रीवास्तव,** वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी)
- **डॉ. निधि वर्मा,** वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान)
- **डॉ. एस.आर. शर्मा,** वैज्ञानिक (पौध सरंक्षण)
- **डॉ. आशुतोष शर्मा,** वैज्ञानिक (कृषि वानिकी)
- **डॉ. विजय सिंह सूर्यवंशी**

कृषि विज्ञान केन्द्र, नरसिंहपुर (म.प्र.)

टमाटर की वैज्ञानिक खेती अपनाकर आमदनी बढ़ायें

टमाटर वर्ष भर उगाया जा सकता है तथा इसका उत्पादन करना बहुत सरल है। टमाटर का उपयोग सब्जी सूप, सलाद, अचार, केचप, प्यूरी एवं सास बनाने में किया जाता है। यह विटामिन ए, बी और सी का अच्छा स्त्रोत है। इसके उपयोग से कब्ज दूर होता है।

भूमि का चुनाव : बलुई-दुमट मिटटी जिसमें जल निकास अच्छा हो टमाटर की खेती के लिये उपयुक्त होती है। भूमि का पी.एच.मान 6 से 7 तक होना चाहिये।

भूमि की तैयारी : दो या तीन बार जुताई करने के बाद बखर चलाकर मिट्टी को अच्छी तरह से भुरभुरी बना लेना चाहिये तथा पाटा लगाकर खेत को सममतल बना लेना चाहिये।

जातियां: लक्ष्मी 5005, सुपर लक्ष्मी, काशी अमृत, काशी अनुपम, काशी विशेष, पुसा सदाबहार, अर्का सौरभ, अर्का विकास, अर्का आभा, अर्का विशाल, जवाहर टमाटर-99।

फसल चक्र

भिण्डी-टमाटर- खीरा बरबटी-टमाटर-करेला
खीरा-टमाटर-लौकी बीज एवं बीजोपचार

टमाटर का बीज 500 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से लगता है। नर्सरी में बीज बोने के पूर्व थायरम या डायथेन एम-45 नामक 3 ग्राम दवा की प्रति किलो ग्राम के बीज की दर से उपचारित करें।

रोपणी तैयार करना : पौधशाला की मिट्टी को कीटाणु एवं रोगाणु रहित करना अति आवश्यक है। इसके लिये क्यारियों को सौर ऊर्जा से उपचारित करें। इसमें तैयार क्यारियों (3.5 मी. गुणा 1.0 मी.) को पोलीथिन शीट से ढंककर करीब 20 से 25 दिन तक रखें। बुवाई के 10 दिन पहले प्रत्येक क्यारियों में 10-20 किलो ग्राम अच्छी सड़ी गोबर की खाद तथा 500 ग्राम 15:15:15 सकल उर्वरक डालियें। नर्सरी क्यारियों में कतार से कतार 10 से.मी. और बीज की दूरी 5 से.मी. (कतार में) रखते हुये एक इंच की गहराई पर बीज को बोयें। बोवाई के बाद क्यारियों को कांस अथवा सूखे पुआल से ढंक दे। इसके तुरंत बाद सिंचाई करना चाहिये। आवश्यकतानुसार सिंचाई और पौध संरक्षण करते रहना चाहिये।

पौध रोपाई : अच्छी तरह तैयार खेत में सायंकालीन समय में कतार से कतार 60 से.मी. तथा पौधे से पौधे 30-45 से.मी. दूरी रखते हुये रोपाई करें तथा सिंचाई करें।

खाद एवं उर्वरक: 200-250 क्विंटल अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर खाद 50 किलो स्फुर तथा 50 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी करते समय डाल देना चाहिये। नत्रजन 100 किलो जिसकी एक तिहाई मात्रा पौधा लगाने के पूर्व तथा बाकी दो तिहाई पौधा लगाने के बाद दो बार में 20 दिन तथा 40 दिन बाद डालना चाहिये। वर्षा ऋतु में नत्रजन की पूरी मात्रा पौधे लगाने के बाद दो बार में 15 दिन तथा 45 दिन बाद डाल देना चाहिये।

सिंचाई: टमाटर की फसल में आवश्यकता होने पर हल्की सिंचाई करें। आवश्यकता से अधिक सिंचाई करने पर फसल पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। वर्षा ऋतु में सामान्य वर्षा होने पर सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती हैं। ठण्ड के दिनों 10-12 दिनों के अंतर से तथा गर्मी में 5-6 दिनों के अतंराल पर सिंचाई करना चाहिये। यदि पाला पड़ने की सम्भावना हो तो खेत की आवश्यक रूप से सिंचाई करें।

निंदाई-गुड़ाई : खेत को खरपतवारों से साफ रखने तथा फसल वृद्धि के लिये निंदाई-गुड़ाई आवश्यक है। परन्तु गुड़ाई करते समय यह ध्यान रखे कि गुड़ाई उथली हो जिससे पौधे की जड़ों को नुकसान न हो। रासायनिक नींदा नियंत्रण हेतु लासो ई.सी. 50 का 4 लीटर मात्रा 1000 लीटर पानी मिलाकर रोपाई के दो दिन पूर्व छिड़काव करें। इस रसायन का प्रभाव केवल 45 दिन तक ही रहता है।

अन्य कार्य: बरसात में फलों को सड़ने से बचाने के लिये पौधों को बांस या लकड़ी के सहारे जमीन से ऊपर रखते हैं। पत्तियों पर कैल्शियम अथवा मैग्नीशियम सल्फेट के 0.3 प्रतिशत छिड़काव करने से फल कम फटते हैं। छिड़काव पौधे लगाने के एक महीने बाद दो बार 15 दिन के अंतर से करना चाहिये।

पौध संरक्षण

कीट

फलों की इल्ली: इस कीट का प्रकोप काफी अधिक होता है। इल्ली कच्चे एवं पके फलों को छेद कर नुकसान पहुंचाती है।

रोकथाम: ट्राईजोफास 40 ई.सी. या नुवान (2 मि.ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।

एपिलेक्ना बीटल: इसके शिशु एवं वयस्क कीड़े पत्तियों को खाकर जालीनुमा बना देते हैं। इल्ली एवं प्रौढ़ दोनों ही अवस्था में नुकसान पहुंचाते हैं।

रोकथाम: फूल आने से पहले सेविन का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करें।

एफिडस, जैसिड एवं सफेद मक्खी : इसमें कीट बहुत ही छोटे होते हैं। ये पत्तियों का रस चूसते हैं।

रोकथाम के लिये

- कीटों की रोकथाम हेतु थायोमेथाक्सॉम 0.4 ग्राम या इमिडाक्लोरप्रिड 0.5 मिली या एसिडामाप्राईड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से दवा का छिड़काव दो सप्ताह के अन्तराल पर करें। नीम तेल 5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

तना एवं फल छेदक: टमाटर में इससे अधिक नुकसान होता है। इस कीड़े की इल्लियां टमाटर के फलों एवं पौधों को हानि पहुंचाती हैं। ये इल्लियां पौधों के तनों और बड़ी पत्तियों की मध्य शिराओं से प्रवेश करती हैं और उन्हें अन्दर से खाती रहती हैं। पौधों की पत्तियां एवं तने सूख जाते हैं। छेद किये गये स्थान पर कीटों का मल स्पष्ट दिखाई देता है। कीट फलों में छेदकर अन्दर प्रवेश कर फलों को खाते हैं, जिससे फल खाने योग्य नहीं रहते।

रोकथाम: रोगग्रस्त पौधे के भाग को काट कर अलग कर दें। ट्राईजोफास 40 ई.सी. (2.5 मि.ली./लीटर पानी) का छिड़काव करें।

थ्रिप्स: वह छोटे-छोटे कीट पत्तियां एवं अन्य मुलायम भागों से रस चूसते हैं। इसका प्रकोप रोपाई के 2 से 3 सप्ताह बाद शुरू हो जाता है। फूल लगते समय प्रकोप बहुत अधिक होता है। पत्तियां सिकुड़कर मुरझाने लगती हैं। क्षतिग्रस्त पौधे को देखने पर मोजेक रोग का भ्रम होता है। पौधों की वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जिससे उपज काफी कम हो जाती है।

रोकथाम: कीटों की रोकथाम हेतु थायोमेथाक्सॉम 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से दवा का छिड़काव करें।

बीमारियां एवं रोकथाम :

अगेती अंगमारी: पत्तियां पर मटमैंले भूरे रंग के धब्बे हो जाते हैं।

रोकथाम: बीजोपचार कार्बेन्डाजिम (12 प्रतिशत)+ मेंकोजेब (63 प्रतिशत) दवा की मात्रा 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से प्रयोग करना चाहिये। मेटालेक्सिल+मेकोजेब 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से प्रयोग करें।

जीवाणु मुरझान: प्रारम्भिक अवस्था में पौधों की निचली पत्तियाँ मुरझाती हैं एवं रोग की अधिकता में सम्पूर्ण पौधे ही मर जाते हैं।

रोकथाम: फसल चक्र अपनायें। स्ट्रप्टोसाइक्लिन 1 ग्राम दवा/10 लीटर पानी+कॉपरऑक्सी क्लोराईड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें।

टमाटर मोजेक: यह रोग तम्बाकू मोजेक वाइरस के कारण होता है। रोग के मुख्य लक्षण पत्तियों का चितकबरा हो जाना है। उन पर गहरे हरे भाग उभरे रहते हैं। पत्तियों का आकार छोटा एवं किनारे कड़े हो जाते हैं। बाद में उभरे हुए भाग पीले पड़ जाते हैं। फलों की संख्या में भी कमी आती है।

रोकथाम: रोगी पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें। रोगर (2 मि.ली.) या मेटासिस्टाक (1 मि.ली.) दवा को एक लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। रोगर का छिड़काव रोपणी अवस्था में भी करें।

पर्ण कुंचन रोग: इस रोग के प्रकोप से पत्तियां छोटी ऊपर की ओर मुड़ी हुई तथा एक जगह एकत्रित दिखाई पड़ती हैं। पत्तियां विकृत, खुरदरी एवं मोटी हो जाती हैं। पौधा झाड़ीनुमा हो जाता है एवं फल-फूल नहीं लगते। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसका प्रकोप वर्षा ऋतु तथा जाड़े में अधिक होता है।

रोकथाम: रोगग्रस्त पौधों को एवं खरपतवारों को उखाड़ कर नष्ट कर दें। एसिडामाप्राईड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से दवा का छिड़काव दो सप्ताह के अन्तराल पर करें। कम पानी एवं कम नत्रजन देने से बीमारी कम की जा सकती है।

आर्द्र गलन: रोग के प्रकोप से रोपणी की नई पौध नष्ट हो जाती है। बीज अंकुरण के बाद मर जाते हैं। भूमि की सतह पर पौधों का अचानक गिर पड़ना और गलना इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं।

रोकथाम: रोपणी की भूमि भुरभुरी एवं अच्छे जल निकास वाली होनी चाहिए। रोपणी क्षेत्र का सोलेराइजेशन (सूर्य उपचार) करें या रोग की आशंका क्षेत्र को बीज बोने के 20 से 25 दिन पूर्व 2 प्रतिशत फार्मेलिन से उपचारित करें। बीज उपचार थाइरम 1.5 ग्राम+बाविस्टीन 1.5 ग्राम या इकोफिट 4 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज के हिसाब से करें। प्रकोप की अवस्था में ब्लाइटॉक्स 50 की 2.5 ग्राम दवा प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।

फल तुड़ाई : टमाटर के फलों की तुड़ाई उसके उपयोग के अनुसार करना चाहिये। ● परिपक्व हरे फलों को दूर बाजार में भेजने के लिये तोड़ना चाहिये। ● पिंक स्टेज के फलों को लोकल बाजार में भेजने के लिये तोड़ना चाहिये। ● पके फलों को घर में उपयोग के लिये तोड़ना चाहिये। ● पूरी तरह पके फलों को तभी तोड़े जब फल 24 घंटे में सरंक्षित पदार्थ बनाने में उपयोग हो।

उपज: टमाटर की उपज, किस्म, भूमि के प्रकार, सिंचाई, रोपाई के समय, पौध संरक्षण और कीट एवं बीमारियों के प्रकोप पर निर्भर करती है। समान्यत: टमाटर की औसतन उपज 200-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर मिलती है।

धनेशा क्रॉप साइंस की डीलर्स मीट और उत्पाद लांच कार्यक्रम आयोजित

अहमदाबाद। धनेशा क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड ने डीलर्स मीट का आयोजन किया। यह कार्यक्रम गुजरात के अहमदाबाद के नोवोटेल में हुआ। कार्यक्रम में कंपनी ने अत्याधुनिक उत्पादों को लांच किया है, जो भारत में कृषि पद्धतियों में क्रांति लाने के लिए कंपनी की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं। इस अवसर पर कंपनी के प्रबंध निदेशक धर्मेश गुप्ता एवं मध्य क्षेत्र के प्रमुख एस.एस. जावला उपस्थित थे।। गुजरात क्षेत्रीय प्रमुख ने सभी भाग लेने वाले डीलरों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में श्री गुप्ता ने प्रतिभागियों को कंपनी के बारे में जानकारी दी। संबोधन के दौरान उन्होंने अपने विचार और बहुमूल्य सुझाव साझा किए एवं सभी वितरकों और हितधारकों को उनके अटूट समर्थन और विश्वास के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने नवीन प्रौद्योगिकियों के प्रभावी उपयोग से किसानों को समृद्धि लाने के लिए कंपनी की दृढ़ प्रतिबद्धता को दोहराया। इस दौरान धनेशा क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड ने अपने नए और उन्नत अत्याधुनिक उत्पादों को पेश किया, जो फसलों को कीट संक्रमण, बीमारी, खरपतवार से बचाने और फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए डिजाइन किए गए थे। धनेशा अब अपने व्यापक पोर्टफोलियो के साथ किसानों को सर्वांगीण फसल समाधान प्रदान करते हैं और राष्ट्र के कृषि परिदृश्य को मजबूत करते हैं।

इस आयोजन के दौरान धनेशा और यूएस आधारित कंपनी बाल्केम के बीच एक रणनीतिक गठबंधन हुआ। बाल्केम कृषि जैव प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता के साथ दुनिया की स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जरूरतों के लिए अपनी तकनीक और अभिनव समाधानों के लिए जानी जाती है। संजीव जैन ने संयुक्त राज्य अमेरिका से बाल्केम का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यह गठबंधन किसानों को सशक्त बनाने और स्थायी कृषि प्रथाओं को सुनिश्चित करने की उनकी यात्रा में मील का पत्थर साबित होगा। गठबंधन कृषि समृद्धि के एक नए युग की शुरुआत करने वाली दोनों संस्थाओं की संयुक्त ताकत का लाभ उठाएगा। इस आयोजन ने अपने वितरकों, हितधारकों और किसानों के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में कार्य किया। वितरकों की विशाल और सक्रिय भागीदारी को के चलते कार्यक्रम बेहद सफल रहा।

आशुतोष गौरव चंबल फर्टिलाइजर्स के नए एरिया मैनेजर नियुक्त

भोपाल। उर्वरक क्षेत्र की अग्रणी कंपनी चंबल फर्टिलाइजर्स ने श्री आशुतोष गौरव को मध्यप्रदेश का नया एरिया मैनेजर मार्केटिंग नियुक्त किया है। इससे पहले श्री गौरव लुधियाना में पदस्थ थे। श्री गौरव अब भोपाल के साथ सम्पूर्ण मध्यप्रदेश का विपणन कार्य देखेंगे। श्री गौरव चंबल फर्टिलाइर्स में 18 वर्षों से सेवाएं दे रहे हैं। इससे पहले श्री गौरव इटावा, आगरा, चंडीगढ़, लुधियाना जैसे शहरों में कार्य कर चुके हैं। इसके पूर्व मध्यप्रदेश में एरिया मैनेजर मार्केटिंग का कार्य श्री जितेंद्र सिंह कर रहे थे। अब श्री जितेन्द्र का तबादला लुधियाना किया गया है।

अभिजीत दुबे को पीएचडी की उपाधि

जबलपुर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय,जबलपुर में शिक्षा के साथ-साथ शोध के कार्य भी निरंतर जारी हैं। इसी क्रम में असेसमेंट ऑफ ग्रोथ एण्ड यील्ड ऑफ चिकपी कल्टीवार अंडर वेरीइंग इनवायरमेंट इन कैमोर प्लेटू एवं सतपुड़ा हिल रीजन शोध विषय पर अभिजीज दुबे ने पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। डॉ. अभिजीत दुबे ने डॉ. अनय रावत के मार्गदर्शन में अपना शोध पूर्ण किया।

इस अवसर पर अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. धीरेन्द्र खरे, अधिष्ठाता उद्यानिकी संकाय डॉ. एस.के. पांडे, अधिष्ठाता कृषि अभियांत्रिकी संकाय डॉ. अतुल श्रीवास्तव, संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जी.के. कौतू, संचालक विस्तार सेवायें डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, संचालक शिक्षण डॉ. अभिषेक शुक्ला, संचालक प्रक्षेत्र डॉ. आर.एस.शुक्ला, अधिष्ठाता कृषि महाविद्यालय, जबलपुर डॉ.आशुतोष श्रीवास्तव, विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण कुमार मिश्रा, अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अमित शर्मा, कुलसचिव रेवासिंह सिसोदिया, लेखा नियंत्रक डी.आर. महोबिया, उप लेखानियंत्रक डॉ. अजय खरे, उप कुलसचिव डॉ. आर.के. समैया, डॉ.टी.आर. शर्मा, कार्यपालन यंत्री डॉ. ए.के. राय,सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी डॉ. बी.एस. द्विवेदी सहित सभी विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, वैज्ञानिकों ने डॉ. अभिजीत को बधाई प्रेषित की।

कोंडागांव में खुलेगा नेचुरोपैथी एवं हर्बल कृषि पर्यटन सेंटर

मां दंतेश्वरी समूह का विस्कान से करार

कोंडागांव। छत्तीसगढ़ राज्य में ईको पर्यटन के विकास एवं संरक्षण में विगत पांच वर्षों से कार्यरत संस्था वसुंधरा प्रकृति संरक्षण समिति (विस्कान) द्वारा प्रदेश में ईको पर्यटन सहित प्राकृतिक चिकित्सा एवं हर्बल खेती को बढ़ावा देने के लिये मां दंतेश्वरी हर्बल समूह के साथ करार किया गया। इस अवसर पर मां दंतेश्वरी हर्बल के संस्थापक डॉ. राजाराम त्रिपाठी, डायरेक्टर अनुराग त्रिपाठी, जसमती नेताम, बली चक्रवर्ती, कृष्णा नेताम, व्यवस्थापक रमेशचंद्र पंडा, शंकर नाग, मैंगो नेताम, विस्कान के अध्यक्ष ज्ञानेंद्र पांडेय, विस्कॉन एग्रो कॉर्प के मुख्य कार्यकारी अधिकारी अभिषेक चौधरी

विशेष रूप से उपस्थित थे। कोंडागांव स्थित मां दंतेश्वरी हर्बल ईस्टेट में विकसित हो रहे ईको रिजॉर्ट में ईको पर्यटन के चार स्वरूपों का विकास किया जायेगा। इनमें कृषि पर्यटन, नेचुरोपैथी, ट्राइबल टूरिज्म एवं ग्रामीण पर्यटन शामिल है। रिजॉर्ट के नेचुरोपैथी सेंटर में लाइफस्टाइल से संबंधित बीमारियों के लिए आवश्यक दिनचर्या में योग, प्राणायाम, ध्यान, आयुर्वेदिक चिकित्सा, नाड़ी शोधन आदि शामिल किया जायेगा जिसके माध्यम से स्वास्थ्य लाभ ले सकेंगे। संस्था द्वारा ग्रामीण पर्यटन के विकास हेतु स्थानीय युवक-युवतियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा जिससे पर्यटन के विकास के साथ-साथ प्रकृति एवं संस्कृति का संरक्षण हो सके।

शनमुखा के उत्पादों से किसानों को मिला बेहतर परिणाम

शनमुखा टेंपर की कहानी-किसान की जुबानी

रेहटी। अधिक तापमान में शनमुखा एग्रीटेक लिमिटेड के प्रोडक्ट ने बहुत शानदार परिणाम प्राप्त किया और इससे किसानों को बहुत लाभ मिला। एमडीओ. महीन वर्मा ने किसानों को शनमुखा के उत्पादों से अवगत कराते हुये बताया कि वे किस प्रकार अपनी उत्पादन लागत कम कर करके अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। श्री वर्मा ने बताया कि जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती ही है इसके साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त होती है। अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा में कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सिंधी साहित्य की चार विभूतियां होंगी सम्मानित

इंदौर। अखिल भारत सिंधी बोली साहित्य सभा के हाल ही में घोषित राष्ट्रीय पुरस्कारों में मध्य प्रदेश की 4 विभूतियां सम्मानित की जाएगी। मूर्ति कला और चित्रकला में महेंद्र कोडवानी इंदौर, साहित्य संवर्धन में रश्मि रामानी इंदौर, सिंधी सोशल मीडिया में अशोक छाबड़िया भोपाल और अदीब अवार्ड से फिल्म और नाटक लेखक मुरलीधर बलवानी भोपाल को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रत्येक को 50-50 हजार रुपए की राशि का पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अलावा नृत्य कला, साहित्य में अमूल्य योगदान और फनकार अवार्ड के लिए भी अन्य राज्यों की तीन विभूतियां चुनी गई हैं। सभा के राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष अशोक मनवाणी ने बताया कि स्टेट प्रेस क्लब अभिनव कला समाज, गांधी हाल परिसर इंदौर में कार्यक्रम संपन्न होगा। गत वर्ष इस राष्ट्रीय संस्था का वार्षिक सम्मान समारोह सिंधु भवन भोपाल में 29 अक्टूबर 2023 को संपन्न हुआ था।

इंदौर की सिंधू मुहिंजी जिजल संस्था के सहयोग से हो रहे पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में सिंधी लोक कला भगत और लोक नृत्यों की प्रस्तुति भी होगी। एक सिंधी नाटक का मंचन भी नमोश तलरेजा और विनीता मोटलानी की नाटक टीम द्वारा किया जायेगा।

दिलीप संघाणी इफको के अध्यक्ष निर्वाचित

निदेशक मंडल की 15वीं प्रतिनिधि महासभा के चुनाव आयोजित

नई दिल्ली। दो महीने की व्यापक, पारदर्शी और विवेकपूर्ण चुनाव प्रक्रिया के बाद इफको ने अपने निदेशक मंडल के लिए 15वीं प्रतिनिधि महासभा के चुनाव आयोजित किये, जिसमें देश भर की 36000 से अधिक सदस्य समितियों के सदस्यों की भागीदारी रही। मार्च के महीने में शुरू की गई एक व्यापक कवायद में दिलीप संघाणी इफको के अध्यक्ष और बलवीर सिंह उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। निदेशक मंडल ने सदैव सहकारी मूल्यों और सिद्धांतों को महत्व देते हुए देश भर में सहकारी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में भरोसा जताया है।

निदेशकों के 21 पद के लिए 9 मई 2024 को इफको कारपोरेट कार्यालय, नई दिल्ली में आयोजित चुनावों में जगदीप सिंह नकई, उमेश त्रिपाठी, प्रहलाद सिंह, बलवीर सिंह, रामनिवास गढ़वाल, जयेशभाई वी रदाड़िया, ऋषिराज सिंह सिसोदिया, विवेक बिपिनदादा कोल्हे, सिमाचल पाढ़ी, के. श्रीनिवास गौड़ा, एस. शक्तिकवेल, प्रेमचंद्र मुंशी, डॉ. वर्षा एल. कस्तूरकर, दिलीप संघाणी, सुधांश पंत, आलोक कुमार सिंह, जे. गणेशन, एम.एन. राजेंद्र कुमार, पी.पी. नागी रेड्डी, बाल्मिकी त्रिपाठी और मारा गंगा रेड्डी अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र से निदेशक मंडल के सदस्य चुने गए। चुनाव पोर्टल के लांच के साथ इस चुनावी यात्रा की शुरुआत हुई। चुनाव सभी सदस्यों की निष्पक्ष, समान और पारदर्शी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। अपनी 36000 से अधिक सदस्य सहकारी समितियों के साथ इफको ने आमसभा सहित प्रतिनिधि महासभा के सदस्यों को चुनने का महत्वपूर्ण कार्य किया। यह जटिल प्रक्रिया दो महीने तक चली, जो इफको की पहुंच और संचालन की व्यापकता को दर्शाता है। इस नई चुनाव प्रणाली की शुरुआत मील का पत्थर साबित हुई, जिसने आवेदन जमा करने या नामांकन दाखिल करने के लिए दिल्ली में व्यक्तिगत उपस्थिति की आवश्यकता को समाप्त कर दिया। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण सभी सदस्य समितियों के लिए उनकी भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बगैर समावेशिता और पहुंच के प्रति इफको की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इफको के प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने कहा कि चुनाव निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से हुए। उन्होंने अध्यक्ष दिलीप संघाणी, उपाध्यक्ष बलवीर सिंह और निदेशक मंडल के सभी सदस्यों को समिति में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए बधाई दी। उन्होंने चुनाव प्रक्रिया में सक्रिय सहभागिता हेतु सभी सहकारी समितियों और मतदाताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

धनेशा क्रॉप साइंस ने मनाया अपना पहला संस्थापक दिवस

नई दिल्ली। धनेशा क्रॉप साइंस ने अपना पहला संस्थापक दिवस मनाया। इस दौरान कंपनी ने अपने सभी व्यापार भागीदारों का भी सम्मान किया। कंपनी का यह समारोह एक सप्ताह तक चला। 5 मई, 2024 रविवार के दिन धनेशा क्रॉप साइंस ने अपना पहला संस्थापक दिवस बहुत ही धूमधाम के साथ मनाया। बता दें कि यह समारोह 1 से 6 मई, 2024 यानी की पूरे सप्ताह तक चला। इस दौरान धनेशा क्रॉप साइंस ने अपने सभी व्यापार भागीदारों का सम्मान किया। यह समारोह सहयोगात्मक भावना और साझा सफलताओं का प्रतीक है।

टीम के साथ उत्सव के दौरान प्रबंध निदेशक धर्मेश गुप्ता ने कंपनी के भागीदारों और हितधारकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुये कहा हमारा पहला संस्थापक दिवस न केवल हमारी उपलब्धियों का जश्न मनाता है, बल्कि कृषि के प्रति हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि भी करता है। हम विश्व स्तर पर कृषक समुदायों के लिए विकास, सहयोग और सेवा की अपनी यात्रा जारी रखने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। समारोह के दौरान एमडी श्री गुप्ता ने कहा पारदर्शिता और कड़ी मेहनत आपको किसी संगठन में सफलता की ओर ले जाने के लिए एक बेहतरीन संयोजन है। उन्होंने अपनी टीम की सराहनीय टीम वर्क और एक नए उद्यम में अपना भरोसा रखने और कंपनी के लक्ष्य के साथ कड़ी मेहनत करने की भावना की सराहना की। कृषि पद्धतियों में क्रांति लाने और टिकाऊ कृषि समाधानों को बढ़ावा देने की दृष्टि से स्थापित धनेशा क्रॉप साइंस ने अपनी स्थापना के बाद से महत्वपूर्ण प्रगति की है।

बीएएसएफ ने किया एफिकॉन कीटनाशक लांच

किसानों को रसचूसक कीटों के नियंत्रण में मिलेगी मदद

नई दिल्ली। बीएएसएफ ने एफिकॉन कीटनाशक लांच किया है। छेद करके रस चूसने वाले कीटों से देश में फसलों को अत्यधिक क्षति होती है, जिससे उत्पादकता और उपज में 35 से 40 प्रतिशत का नुकसान होता है। भारत में किसान अब नए बीएएसएफ कीटनाशक एफिकॉन के साथ इस चुनौती का सामना कर सकते हैं। एफिकॉन एक विशेष फॉर्मूलेशन में बीएएसएफ के नए सक्रिय घटक एक्सालियन द्वारा संचालित है।

अपने अनूठे तरीके से काम करने के साथ, एफिकॉन कीटनाशक नए आईआरएसी समूह 36 के तहत बाजार में पेश किए गए पहले कंपाउंड में से एक है, जो कीटनाशकों की एक पूरी तरह से नई श्रेणी (समूह 36-पाइरिडाजिन) का प्रतिनिधित्व करता है, जिसका मौजूदा उत्पादों के साथ कोई ज्ञात क्रॉस-रेजिस्टेंस नहीं है। एफिकॉन कीटनाशक को पहली बार 2023 में ऑस्ट्रेलिया में लांच किया गया था। भारत इस नए रसायन को प्राप्त करने वाले दुनिया के उन शुरुआती देशों में से एक है जो किसानों को रसचूसक कीटों के नियंत्रण में सहायता करेगा।

इस अवसर पर बीएएसएफ एग्री साल्यूशंस, एशिया पेसिफिक के सीनियर वाईस प्रेसिडेंट सिमोन बार्ग ने कहा बीएएसएफ में हम जो कुछ भी करते हैं वह खेती के प्रति प्रेम के कारण करते हैं। हम किसानों की जरूरतों को समझने के लिए उनके साथ सुनने और काम करने के लिए समर्पित हैं ताकि हम अपनी विशेषज्ञता को लागू करके फसलों को कीटों से बचाने और उत्पादकता बढ़ाने में मदद कर सके।

एफिकॉन कीटनाशक की एक महत्वपूर्ण खूबी इसकी अनूठी क्रियाविधि है। यह चेपा, फुदका और सफेद मक्खियों जैसे कीटों के जीवनकाल की कई अवस्थाओं पर अत्यधिक असरदार है। एफिकॉन तुरंत कीड़ों को खाने और पौधों को नुकसान पहुंचाने से रोकता है। अपने प्रणालीगत गुणों के कारण एफिकॉन नई फसल की वृद्धि के लिए भी लंबे समय तक चलने वाला अवशिष्ट नियंत्रण प्रदान करता है।

बीएएसएफ इंडिया के बिजनेस डायरेक्टर एग्रीकल्चरल सॉल्यूशंस गिरिधर रानुवा ने कहा- एफिकॉन भारतीय किसानों को कपास और सब्जियों जैसी विभिन्न प्रकार की फसलों में कीटों से प्रभावी और लंबी अवधि की सुरक्षा में मदद करेगा। लेबल पर दिए गए निर्देशों के अनुसार प्रयोग किए जाने पर एफिकॉन0 परागणकों सहित गैर-लक्षित सजीवों और लाभकारी कीड़ों के लिए भी अत्यधिक अनुकूल है।

बीएएसएफ एग्रीकल्चरल सॉल्यूशंस के ग्लोबल स्ट्रैटेजिक मार्केटिंग के सीनियर वाईस प्रेसिडेंट डॉ. मार्को ग्रोजदानोविक ने कहा एफिकॉन कि यह उपलब्धि एक कीटनाशक पोर्टफोलियो विकसित करने के हमारे लक्ष्य को पुष्ट करती है जो दुनिया भर के किसानों की मदद करता है। बीएएसएफ भारतीय उद्योग और कृषि को उनकी क्षमता को अधिकतम करने में मदद करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा भारतीय किसान उन्नत समाधानों तक पहुंच के हकदार हैं, जिससे उन्हें रस चूसने वाले कीटों का प्रबंधन करके बेहतर पैदावार प्राप्त करने में मदद मिल सके। उन्होंने कहा हम आश्वस्त हैं कि किसानों को प्रभावी और टिकाऊ समाधान प्रदान करके हम पर्यावरण पर प्रभाव को कम करते हुए खाद्यान्न की बढ़ती मांग को पूरा करने में उनकी मदद कर सकते हैं।

नैनो यूरिया व डीएपी के प्रचार-प्रसार के लिये मिनी साउंड सिस्टम किया भेंट

बालाघाट। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक मर्यादित बालाघाट अंतर्गत आने वाली 126 बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों में नैनो यूरिया व डीएपी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को लेकर इफको बालाघाट द्वारा मिनी साउंड सिस्टम बैंक मुख्यालय को प्रदाय किया गया। इस अवसर पर श्री वैदिक ने बताया कि यह पहला अवसर है जब बैंक मुख्यालय को इफको नैनो यूरिया, डीएपी के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए मिनी साउंड सिस्टम प्रदाय किया गया है। बैंक सीईओ श्री पटले ने बताया कि इफको द्वारा समिति स्तर पर नैनो यूरिया प्रदाय किया जा रहा है जिसका विक्रय किया जा रहा है। आयोजित होने वाले कार्यक्रम के लिए यह मिनी साउंड सिस्टम कारगर साबित होगा। इसका उपयोग समिति और शाखाओं में होने वाले कार्यक्रमों में किया जावेगा। इस दौरान डीडीए श्री खोबरागढ़े ने कहा कि जिले में इफको नैनो यूरिया, डीएपी की ओर किसानों का रुझान लगातार बढ़ रहा है। इस अवसर पर बैंक सीईओ आर.सी. पटले, डीडीए राजेश खोबरागढ़े, इफको क्षेत्रीय अधिकारी वैदिक अगाल, प्रबंधक लेखा पी. जोशी, फील्ड अधिकारी राजेश नागपुरे उपस्थित रहे।

दुधारू पशुओं की प्रमुख बीमारियां

- डॉ. अशोक सिंह
  पूर्व प्राध्यापक एवं प्रभारी
  पशु अनुवांशिकी एवं अभिजनन विभाग
  पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय महू (म.प्र.)

दुधारू पशु कई रोगों की चपेट में आते हैं। इससे दूध उत्पादन तो प्रभावित होता ही है साथ ही कई बार पशु की मृत्यु तक हो जाती है। समय रहते पशु का उपचार करवाने से इस नुकसान से बचा जा सकता है।

दुधारु पशुओं के प्रमुख रोग व उपचार–

थनेला (मेस्टाइटिस):– थनेला रोग का कारण: जीवाणु, विषाणु, फफुंद, माइकोप्लाजमा एवं रिकेट्सिया

संक्रमण: –

यह बीमारी पशुओं को गंदे, गीले व कीचड़ भरे स्थान पर बांधने से होती हैं। क्थन में चोट लगने से, बछड़े द्वारा दूध पीते समय थन को दांत लगने से। क्वाले के गंदे हाथ व कपड़े। क्दूध निकालने के बाद जानवर का बैठ जाना।

रोग के लक्षण: –

रोगी पशु के दूध में फाइब्रिन के थक्के बन जाते हैं। क्दूध छिछड़ युक्त होता है। क्दूध के रंग में परिवर्तन होता है जैसे कभी पीला, हरा, नीला रंग। क्यदि बीमारी अधिक तीक्ष्ण हो तो अयन व थनों के आसपास सूजन आ जाती हैं। क्दूध फट जाता है तथा दूध में खून व मवाद पड़ जाता है। क्यदि बीमारी अधिक तीक्ष्ण हो तो अयन पत्थर जैसा कड़क हो जाता है।

रोग की रोकथाम: –

पशुशाला के फर्श को सूखा रखें, समय-समय पर चूने का छिड़काव करें। क्थनों को बहारी चोट लगने से बचाये। क्थनैला बीमारी से ग्रस्त थन का दूध अलग बर्तन में दुहे तथा उपयोग में न लाये। क्दूध पूरा दुहे। क्दूध दुहने के बाद थनों को आयडोफोर सलुशन या लाल दवा (पोटेशियम परमेगनेट) में डुबोये। क्दूध दुहने के पश्चात थन नली कुछ देर खुली रहती है। अत: पशु को कम से कम आधा घंटे तक फर्श पर बैठने न दें। क्यह बीमारी प्रबन्धन की है इसे रोका जा सकता है। इसलिये रोकथाम उपचार से अच्छा होता है।

उपचार: – बीमारी ग्रस्त थन से दूध दिन में 6-7 बार निकाले। कठपचार के लिये अन्त: स्तनीय दवाईयां जैसे टिलोक्स, पेनडिस्ट्रीन एस. एच., मेमीटेल, आदि का उपयोग करने से लाभ होता है। क्यशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करे। क्खुरपका एवं मुंह पका (एफ. एम. डी)

बीमारी का कारण: –

यह एक संक्रमक बीमारी है। यह बीमारी विषाणु (वाइरस) से होती हैं।

संक्रमण: – यह बीमारी जाड़े के मौसम में ज्यादा फैलती है।

- स्वस्थ्य पशु का बीमार पशु के सम्पर्क में आने से यह बीमारी फैलती है।
- रोग ग्रसित पशु का दूषित चारा, पानी आदि का उपयोग स्वस्थ्य पशु द्वारा करने पर यह बीमारी फैलती है।

बीमारी के लक्षण: –

पशु के मुंह के अन्दर, गालों में, जीभ में, होंठ व तालू में, मसूडों में, नथुनों आदि पर छाले हो जाते है। दूध देने वाले पशुओं का दुध कम हो जाता है। छाले होने के कारण मुंह से झागदार लार बहने लगती है।

रोकथाम:–

सबसे बेहतर बीमारी से बचने का कारगर तरीका टीकाकरण है।

- वर्ष में दो बार मार्च – अप्रैल एवं अक्टुबर – नवम्बर माह में।
- बीमार पशुओं को स्वस्थ्य पशुओं से अलग सूखे व साफ सुथरे स्थान पर रखे।
- पशुशाला को गर्म पानी में 4 प्रतिशत कपड़ा धोने का सोडा (कास्टिक सोडा) से धोना चाहिये।

उपचार: – रोगी पशु के मुंह के छालों को एन्टीसेप्टीक लोशन जैसे बोरिक एसिड, सुहागा आदि के घोल से धोना चाहिये। उसके बाद एक भाग सुहागा 4 भाग शहद मिलाकर छालों पर लेप करने से आराम मिलता है।

- पेरों के छालों व घोलों को पानी में एक प्रतिशत लाल दवा के घोल से धोने पर भी फायदा होता है।
- पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करें।

गलघोंटू–

यह एक जानलेवा संक्रमक बीमारी है जो प्राय: वर्षाकाल में फैलती हैं।

बीमारी का कारण– यह संक्रमक रोग जीवाणु के द्वारा होता है। **संक्रामक:** – दूषित पानी व चारे के द्वारा यह रोग फैलता है।

- बीमार पशु के स्वस्थ्य पशु के निकट सम्पर्क में आने से फैलता है।

लक्षण –

- अचानक तेज बुखार आता है, आंखे लाल होती है और पशु कांपने लगता है।
- पशु खाना पीना व जुगाली करना बंद कर देता है।
- दुधारू पशु में अचानक दुध उत्पादन घट जाता है।
- पशु के जबडों और गले के नीचे सूजन आ जाती हैं तथा सांस लेने में कठिनाई होती है और घुर्र-घुर्र की आवाज आती है।
- जीभ सूज जाती है और बाहर निकल आती है तथा लगातार लार टपकती है।
- रोगी पशु में उपरोक्त लक्षण दिखाई देने के 1-2 दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

रोकथाम :–

- सबसे बेहतर बीमारी से बचने का तरीका टीकाकरण है।
- वर्ष में एक बार वर्षा ऋतु से पहले यानि मई-जून।
- मृत पशु द्वारा छोड़े गये चारे व दाने को जलाकर नष्ट कर दें।
- पशु अवास को जीवाणु नाशक (लाल दवा) के घोल से धोना चाहिये।

उपचार:– पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार करें।

आवारा पशुओं को गौशाला में देखरेख के लिये भेजा जायेगा : श्री कोचर

पशुओं के सींगों पर रेडियम लगाने के निर्देश

दमोह। शहर में देखने में आया है कि आवारा पशु सड़कों पर घूमते हैं या फिर कुछ ऐसे पशु जो की परित्यक्त कर दिए जाते हैं, छोड़ दिए जाते हैं या फिर ऐसे पशु मिलते हैं जिनके मालिक होते हैं, लेकिन वह शहर में घूमने के लिए छोड़ देते हैं। इन पशुओं के कारण यातायात की समस्या होती है। कलेक्टर सुधीर कुमार कोचर ने गौ-शालाओं के संचालकों और संबंधित अधिकारियों की एक बैठक आहूत कर आवश्यक दिशानिर्देश दिये। इस अवसर पर एसडीएम आर.एल. बागरी, पशु चिकित्सा विभाग के उप संचालक श्री खान एवं सीनियर चिकित्सक डॉ. पाण्डे, परियोजना अधिकारी जिला पंचायत अभिलाषा शुक्ला, सीईओ जनपद पूनम पाण्डे, मुख्य नगर पालिका अधिकारी सुषमा धाकड़ सहित गौ-शालाओं के संचालकगण मौजूद थे।

श्री कोचर ने कहा पशुओं के सड़क पर बैठने से राहगीरों की दुर्घटना में चोट से जनहानि या किसी प्रकार से नुकसान पहुंचने की स्थिति होती है और इससे कई बार पशुओं की सुरक्षा को भी खतरा होता है। गौशाला संचालकों, पशुपालन विभाग, एसडीएम, सी.एम.ओ. और सी.ई.ओ. की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि इस संबंध में हर हफ्ते एक ड्राइव चलाएंगे जिसमें शहर के आवारा पशुओं को इकट्ठा किया जाएगा और इनको निकटस्थ गौशाला में देखरेख के लिए भेजा जायेगा।

उन्होंने कहा यह ड्राइव लगातार हर हफ्ते चलाई जायेगी ताकि किसी भी स्थिति में आवारा पशु इकट्ठे ना हो और बारिश के दिनों में एक्सीडेन्ट से बचाने के लिये पशुओं के सींगों पर रेडियम लगाने के निर्देश जारी किये जायें, ताकि वे दूर से चमके और किसी भी प्रकार की दुर्घटना होने की स्थिति उत्पन्न हो। इससे शहर भी साफ-सुथरा रहेगा, पशुओं की देखभाल भी अच्छे तरीके से हो पायेगी और जनता भी सुरक्षित रहेगी। बैठक में गौ-शालाओं के संचालकों ने भी अपने-अपने विचार और समस्याएं रखी, जिन पर कलेक्टर श्री कोचर ने संबंधित विभाग को कार्यवाही करने के निर्देश दिये।

(पृष्ठ 6 का शेष)

मृदा स्वास्थ्य यह क्यों...

अब पौधों की वृद्धि का समर्थन नहीं कर सकती है। मिट्टी के क्षरण और खराब मिट्टी के स्वास्थ्य के परिणाम खेती के लिए अच्छी मिट्टी के नुकसान से कहीं आगे तक जाते हैं। वे मानव कल्याण और पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए चूँकि खराब मिट्टी में कम पानी होता है, इससे पौधों के लिए उपलब्ध पानी की मात्रा कम हो सकती है और सूखे की स्थिति बिगड़ सकती है। मिट्टी के कटाव से नदियों और जल निकायों में प्रदूषण भी बढ़ सकता है और जल जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

हम मृदा स्वास्थ्य की रक्षा कैसे कर सकते हैं

मृदा स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए कृषि पद्धतियाँ

- रसायनों का उपयोग कम करें। बायोकंट्रोल और बायोप्रोटेक्शन उत्पादों जैसे प्राकृतिक समाधानों का चयन करके। ये गैर-लक्षित जीवों के लिए सुरक्षित हैं और मिट्टी की जैव विविधता को संरक्षित कर सकते हैं। यह जानने के लिए कि ये उत्पाद मृदा स्वास्थ्य को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं, हमारा ब्लॉग पुनर्योजी कृषि में जैव संरक्षण का उपयोग क्यों करें पढ़ें।
- मशीनरी और पशुधन से मिट्टी के संघनन को कम करें। उदाहरण के लिए, न्यूनतम या शून्य जुताई और चारागाह प्रबंधन के माध्यम से, जैसे किअत्यधिक चराई से बचना। ये मिट्टी की अशांति को कम करते हैं, जो मिट्टी के स्वास्थ्य को वापस बनाने में मदद करता है।
- फसलों का चक्रीकरण करें। इससे मिट्टी के ऊपर और भीतर विविधता बढ़ती है और कीटों और बीमारियों का चक्र टूट जाता है। फलियाँ चक्रण के लिए अच्छी फसल है क्योंकि ये मिट्टी में नाइट्रोजन बढ़ाती हैं।
- पानी का प्रबंधन पेड़ और झाड़ियाँ जैसी वनस्पति लगाने से मिट्टी में पानी के प्रवेश को बढ़ाने में मदद मिल सकती है। मल्चिंग जैसी अन्य तकनीकें पानी बचाने और मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद करती हैं।
- पोषक तत्वों का प्रबंधन सावधानीपूर्वक योजना बनाकर खाद और उर्वरक लगाने से पोषक तत्वों की अधिकता को कम करने में मदद मिलती है।
- एकीकृत कीट प्रबंधन कीटों के प्रबंधन का यह दृष्टिकोण मिट्टी सहित पर्यावरण पर अवांछित प्रभावों को सीमित करता है

- डॉ. किंजल्क सी. सिंह
- डॉ. चंद्रजीत सिंह
- डॉ. अजय कुमार पांडेय

कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा (म.प्र.)

बेलः बैसाख माह की एक प्रभावशाली औषधि

स्कन्द पुराण के अनुसार एक बार जब माता पार्वती भ्रमण कर रही थीं तब मंदराचल पर्वत पर माता पार्वती के पसीने की एक बूँद गिरी जिससे एक पेड़ की उत्पत्ति हुई जिसे बिल्व अथवा बेल के नाम से जाना जाता है।

बेल के पूरे पेड़ पर माता पार्वती के रूपों का वास माना जाता है और बेल की जड़ों में माता गिरिजा का वास जाता है। इसी कारण बेल का पेड़ भगवान शिव को प्रिय माना गया है। बेल के तीन पत्रों का समूह को ब्रम्हा, विष्णु और शिव माना जाता है। ऐसे तीन पत्रों के समूह को शिव भगवान के त्रिशूल अथवा त्रिनेत्र भी माना जाता है। हालांकि पाँच पत्रों के समूह को और भी पवित्र माना जाता है।

बिल्व के पेड़ को सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर, पवित्र तथा पूज्यनीय माना जाता है। बेल के पत्र को भगवान शिव को चढ़ाया जाता है जिससे भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। बेल के पेड़ के विभिन्न भाग आयुर्वेदिक औषधि के रूप में उपयोग में आते हैं। बेल के फल भी श्रेष्ठ औषधि होती है।

बेल फल का पोषक मान

बेल के फल में 61.5 ग्राम नमी, 1.8 ग्राम प्रोटीन, 0.3 ग्राम वसा, 1.7 ग्राम खनिज तत्व, 2.9 ग्राम रेशा, 31.8 ग्राम कार्बोज (कार्बोहायड्रेट), 137 किलो कैलोरी ऊर्जा (एनर्जी), 85 मिली ग्राम कैल्शियम, 50 मिलीग्राम फॉस्फोरस, 0.6 मिलीग्राम लौह तत्व 55 माईक्रोग्राम कैरोटीन (विटामिन ए हेतु), 0.13 मिलीग्राम थायमिन, 0.03 मिलीग्राम रायबोफ्लेविन, 1.1 मिलीग्राम नियासिन और 8 मिलीग्राम विटामिन सी होता है।

बेल के कच्चे फल के गुण

बेल का कच्चा फल, लघु (पचने में हल्का) रुक्ष (रूखा) तथा उष्ण वीर्य (गर्म तासीर) का होता है। इसका स्वाद कसैला (ऐसे स्वाद के आहार से जीभ ऐंठती है) तथा तिक्त (तीखा अथवा मिर्च के जैसा) होता है। किन्तु पका हुआ फल स्वाद में मीठा होता है। किन्तु बेल एक ऐसा विशिष्ट फल है जिसका कच्चे रूप की तुलना में पके रूप का सेवन अधिक किया जाता है।

लघु तथा तिक्त रस का होने के कारण यह फल कफ को कम करता है तथा उष्ण वीर्य तथा कसैला स्वाद होने के कारण यह वात संबंधी समस्या को कम करता है। बेल फल शरीर में अच्छे पित्त को बढ़ाता है तथा यह दीपन [अग्निवर्धक (कार्मिनेटिव)], पाचन तथा ग्राह्य भी है अतः पाचन तथा पेट संबंधी समस्याओं में लाभकारी है। जिनके शरीर में अथवा शरीर के अंदर आँतों में अथवा मलद्वार में सूजन रहती है उनके लिए भी बेल का फल फायदेमंद होता है। यह धातुओं को भी बल प्रदान करता है।

मलमार्ग, मूत्रमार्ग से, उल्टी के साथ, गर्मी के कारण नाक से खून बहना यह रोकता है क्योंकि यह रक्त स्तंभक अर्थात रक्त को रोकने में लाभकारी होता है। उल्टी, दस्त, गैस बनना, गैस के कारण पेट फूलना तथा पेट दर्द में भी यह लाभकारी होता है।

चूँकि बेल वात को संतुलित करता है अतः नींद लाने में भी सहायक होता है। बार-बार आने वाले बुखार को कम करने में तथा वजन को कम करने में भी लाभकारी है।

यह स्नायु तंत्र (नर्वस सिस्टम) के लिए अत्यंत फायदेमंद है तथा शरीर में शर्करा के स्तर को संतुलित (डायबिटीज) रखने में मदद करता है क्योंकि यह हाइपोग्लाइसैमिक है। बेल के फल में एंटी वायरस है एंटी फंगल गुण विद्यमान भी हैं।

बेल फल के सेवन का तरीका

- खाना खाने से पूर्व 2 से 5 ग्राम बेल पाऊडर का सेवन किया जा सकता है।
- बेल के फल को फोड़कर भी इसका गूदा खाया जाता है। किवदंति है कि बेल के फल को जमीन पर नहीं फोड़ा जाता है बल्कि लकड़ी के पाटे अथवा लकड़ी पर ही इसे फोड़ा जाता है अन्यथा फल अत्यधिक कड़वा हो जाता है।
- बेल का शर्बत, बेल के मुरब्बे का सेवन भी प्रचलन में है।

बेल का फल खाने का समय

परंपरागत तरीके से इस फल को बैसाख के महीने में खाना अनुशंसित है।

बेल के फल का परिरक्षण

बेल के फल को लंबे समय तक खाने योग्य अवस्था में रखने के लिये (परिरक्षित रखने के लिये) शुष्क चूर्ण (पाऊडर), मुरब्बा और शर्बत बनाया जाता है।

- अनु सिंह, खाद्य प्रौद्योगिकी केन्द्र
  इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)
- डॉ. अखिलेश कुमार
  कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा (म.प्र.)

स्वास्थ्य के लिए गर्मियों में लाभकारी है तरबूज

तरबूज (सिट्रूलस लैनेटस) मूलतः उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पाया जाने वाला कद्दूवर्गीय परिवार का सदस्य है। इसे तरबूज, मतिरा, हिरमाना, कालिंदी, कलिंदा आदि नामों से भी जाना जाता है। इसकी खेती शुष्क क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत तक विस्तृत रूप में की जाती है।

गर्मी के दिनों में तरबूज एक अत्यन्त लोकप्रिय फल माना जाता है। कई शुष्क क्षेत्रों में इसके कच्चे फलों की सब्जी भी बनाई जाती है। इसके फल पकने पर काफी मीठे एवं स्वादिष्ट होते हैं। तरबूज की मिठास मुख्य रूप से ग्लूकोज और फ्रक्टोज के संयोजन के कारण होती है। लाइकोपीन जैसे रजंक के उपस्थिति के कारण तरबूज का रंग लाल होता है।

तरबूज के पोषक तत्व : तरबूज एक सर्वोत्कृष्ट फल है जिसमें पोषक तत्व लाइकोपीन और फाइटोकेमिकल्स प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। यह मानव स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता हैं जिसमें एंटी-इंफ्लेमेटरी, एंटीकैंसर और एंटीऑक्सीडेंट गुण प्रमुख होते हैं। यह विटामिन बी, सी और ई के साथ-साथ फास्फोरस, मैग्नीशियम, कैल्शियम और आयरन जैसे खनिजों का एक अच्छा स्रोत होता है। तरबूज के छिलके और बीज में भी अमीनो एसिड, सिट्रुलिन, फाइबर, खनिज और फिनोलिक यौगिकों की उपस्थिति इसे स्वास्थ्य के लिए लाभकारी बनाते हैं। तरबूज में सिट्रुलिन नामक अमीनो एसिड होता है जो मानव शरीर में जाने के बाद अर्जीनाइन में बदल जाता है। अर्जीनाइन एक अमीनो एसिड होता है जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसके फल में 92 प्रतिशत पानी, 0.2 प्रतिशत प्रोटीन, 0.3 प्रतिशत खनिज उपस्थित होता है।

तरबूज का पोषकमान

पोषक मूल्य	प्रति 100 ग्राम
ऊर्जा	30 किलो कैलोरी
कार्बोहाइड्रेट	7.55 ग्राम
पानी	91.45 ग्राम
प्रोटीन	0.6 ग्राम
शर्करा	6.2 ग्राम
फाइबर	0.4 ग्राम
विटामिन सी	8.1मिलीग्राम
विटामिन ए	569 मिलीग्राम
आयरन	0.24 मिलीग्राम
सोडियम	1 मिलीग्राम
लाइकोपीन	4532 माइक्रोग्राम

तरबूज के स्वास्थ्य लाभ

– तरबूज में लाइकोपिन पाया जाता है जो त्वचा की चमक को बरकरार रखता है। तरबूज में विटामिन ए, बी, सी तथा लोहा भी प्रचुर मात्रा में मिलता है, जिससे रक्त सुर्ख व शुद्ध होता है।

- हृदय संबंधी बीमारियों को रोकने में भी तरबूज एक रामबाण उपाय है। ये दिल संबंधी बीमारियों को दूर रखता है। यह कोलस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रित करता है जिससे इन बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।
- विटामिन सी और विटामिन बी-6 की प्रचुर मात्रा होने के कारण ये शरीर के इम्यून सिस्टम को भी अच्छा रखता है, वहीं विटामिन ए आंखों के लिए अच्छा होता है।
- तरबूज की तासीर ठंडी होती है, इसलिए ये दिमाग को शांत रखता है और हमारे शरीर का तापमान संतुलित रहता है।
- तरबूज के बीज भी बहुत उपयोगी होते हैं। बीजों को पीसकर चेहरे पर लगाने से निखार आता है। साथ ही इसका लेप सिर दर्द में भी आराम पहुंचाता है।
- तरबूज के नियमित सेवन से कब्ज की समस्या दूर हो जाती है। साथ ही खून की कमी होने पर इसका जूस फायदेमंद साबित होता है।
- इसके उबले बीजों के सीरप का रोजाना खाली पेट सेवन करना मधुमेह के रोगी के लिए काफी फायदेमंद होता है। इस बीमारी के लिए यह एक प्राकृतिक इलाज है।
- जिनको उच्च रक्तचाप की समस्या हो, उन्हें तरबूज जरूर खाना चाहिए। तरबूज में बहुत कम मात्रा में सोडियम होता है और ये ठंडा भी होता है।
- तरबूज में फाइबर की प्रचुर मात्रा पाई जाती है जो हमारे पेट के लिए अत्यंत लाभदायक होता है।
- तरबूज में कैरोटीन और लाइकोपीन नामक यौगिक पाए जाते हैं जो कैंसर से शरीर की रोकथाम करते हैं।

वर्तमान में रोगों में तेजी से वृद्धि हो रही है। ऐसे में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक उपभोक्ता ऐसे खाद्य पदार्थों में अधिक रुचि दिखा रहे हैं, जो स्वास्थ्य को लाभ प्रदान करते हैं। ज्यादा गर्म क्षेत्रों में लोग गर्मी के दौरान तरबूज का सेवन करते हैं। तरबूज में पानी की पर्याप्त मात्रा होती है जो शरीर में पानी की कमी को पूरा करता है। गर्मियों में इसका सेवन निरन्तर करना चाहिए।

कृषक सफलता की कहानी

सन् 2005 में राष्ट्रीय जैविक उद्यानिकी कृषि भूषण अवार्ड उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी द्वारा उद्यानिकी, औषधीय एवं जैविक खेती के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये ग्राम-जोतपुर, तहसील मनावर जिला धार के कृषक श्री रमेश एम. पटेल को दिया गया।

सन् 2004 में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से जैविक उद्यानिकी, औषधीय कृषि के संबंध में सौजन्य भेंट कर लगाये गये जैविक फल, मौसम्बी, अमरूद व सीताफल भेंट किया।

मप्र राज्य लघु वनोपज सहकारी संघ मर्यादित भोपाल के डिप्टी डायरेक्टर के.के. शर्मा व आठ जिलों से कृषि अधिकारियों द्वारा फार्म का अवलोकन किया गया।

इंदौर एडिशनल कमिश्नर अजीत कुमार एवं धार जिले के एडीएच श्री गुप्ता द्वारा भी फार्म का विजिट किया गया।

पुणे में सन् 2010 में पांच दिवसीय इण्डो-इजराइल ट्रेनिंग सेन्टर में उपस्थिति दर्ज कराई।

मनावर तहसीलदार एस. पी. सिंह एवं अनुविभागीय अधिकारी राजस्व वर्तमान में कमिश्नर वी.एल. कौर द्वारा फार्म हाउस का अवलोकन किया।

गत वर्ष गर्म जलवायु वाले क्षेत्र में स्ट्राबेरी की फसल का सफलतापूर्वक उत्पादन लिया।

इस फार्म में मौसम्बी की नई वैरायटी पी.पी.एम., गोल्ड का पेड़ है जो तीन साल का है। जिसमें भरपूर मात्रा में मौसम्बी लगती है।

डॉ. शुक्ला का केवीके में स्वागत

रीवा। कृषि महाविद्यालय रीवा में डा. अभिषेक शुक्ला, निदेशक शिक्षण सेवाएं जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर के आगमन पर अधिष्ठाता डा. एस.के. त्रिपाठी, केन्द्र के प्रमुख डॉ. ए.के. पांडेय एवं कुठलिया प्रक्षेत्र के प्रमुख डॉ. एस.एम. कूर्मवंशी ने पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया।

श्री शुक्ला ने प्राध्यापकों एवं वैज्ञानिकों के साथ बैठक कर महाविद्यालय में स्नातकोत्तर एवं परास्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं के शिक्षण के विषय में जानकारी ली और उनके शिक्षण स्तर को और अच्छा करने के लिए चर्चा की। साथ ही साथ अन्य समस्याओं से अवगत हुए। इस अवसर पर सभी विभागाध्यक्ष एवं शिक्षकगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. आर.के. तिवारी एवं धन्यवाद डॉ. अखिलेश कुमार ने किया।

वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने ली स्वच्छता की शपथ

रीवा। कृषि विज्ञान केन्द्र, रीवा में कृषि वैज्ञानिकों एवं कर्माचारियों ने स्वच्छता की शपथ ली। केंद्र के प्रमुख डॉ. ए.के. पांडेय ने कहा कि अपने आसपास साफ-सफाई रखने से जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है और संक्रामक बीमारियों से लड़ने की क्षमता भी बढ़ती है।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अखिलेश कुमार ने बताया कि स्वच्छता से निकलने वाले गीला और सूखा कचरे का उपयोग खाद बनाने में होता है जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ती है और फसलों का उत्पादन बढ़ता है। मनुष्य को अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता को शामिल करना चाहिए। स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत 2 अक्टूबर 2014 को हुई जो व्यापक तौर पर एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में था। जिसका प्रभाव यह है कि आज गांव व शहर में साफ-सफाई देखी जा रही है। इस अवसर पर केंद्र के अन्य वैज्ञानिकों ने अपने विचार रखें जिसमें प्रमुख रूप से डॉ. राजेश सिंह, ए.के. पटेल, डॉ. संजय सिंह, डॉ. के.एस. बघेल, संदीप शर्मा, मंजू शुक्ला एवं निर्मला शामिल रहे।

कृषि वैज्ञानिकों ने खेतों का किया भ्रमण

खरीफ फसलों की खेती का दिया तकनीकी मार्गदर्शन

सिवनी। कृषि विज्ञान केंद्र सिवनी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल वैज्ञानिक, डॉ. के.के. देशमुख, डॉ. राजेंद्र सिंह ठाकुर, इंजि. कुमार सोनी द्वारा बरघाट विकासखंड के ग्राम कॉचना में प्रगतिशील किसान अयोध्या प्रसाद भोयर के खेतों का भ्रमण किया गया। इस दौरान रबी मौसम की धान की किस्म जे.आर. 206 एवं सी.आर. 314 फसलों के खेतों

का भ्रमण किया गया। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा धान की खेती की समस्याओं को जाना एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कृषि वैज्ञानिकों के दल ने जानकारी देते हुए बताया कि रबी मौसम की धान की फसल इस वक्त पकने की स्थिति में आ चुकी है, ऐसे समय में खेतों में पर्याप्त पानी एवं नमी को बनाए रखना आवश्यक है ताकि बालियों में दाना सही आकार में भर सके एवं उत्पादन में कमी ना आए। भ्रमण के दौरान ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी विक्रम सिंह उपस्थित रहे।

जैविक खेती से कम लागत में अधिक उत्पादन

शहडोल। कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल के वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख डा. मृगेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में शासकीय पंडित शम्भुनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल के विद्यार्थियों ने व्यवसायिक प्रशिक्षण अंतर्गत जैविक खेती विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. मृगेंद्र सिंह ने विद्यार्थियों से कहा कि जैविक खेती की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है। जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढ़ाने में पूर्णत: सहायक है। जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती ही है इसके साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त होती है तथा अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय के 25 विद्यार्थी करेंगे मिट्टी की जांच

रीवा। भारत सरकार के स्कूल स्वाइल हेल्थ कार्यक्रम के तहत केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक एक का चयन किया गया है। इस स्कूल के 25 विद्यार्थी तथा शिक्षक मोहम्मद इखलाक आजाद को मिट्टी परीक्षण का प्रशिक्षण दिया गया है। विद्यार्थियों ने रीवा विकासखण्ड के ग्राम अजगरहा में जाकर विभिन्न किसानों के खेतों से मिट्टी के नमूने एकत्रित किए। सहायक मिट्टी परीक्षण अधिकारी डॉ. बी.पी. सिंह ने मोबाइल एप के माध्यम से ऑनलाइन मिट्टी के नमूने की विधि समझाई। इस मौके पर उप संचालक कृषि यू.पी. बागरी ने कहा कि प्रत्येक किसान अपने हर खेत की मिट्टी का परीक्षण कराकर स्वाइल हेल्थ कार्ड बनवा लें। इस अवसर पर कृषि वैज्ञानिक डॉ. ए.के. पाण्डेय, कृषि वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश पटेल, एसएडीओ आर.के. पटेल, विनोद कुमार पाण्डेय उपस्थित रहे।

गोदामों में भंडारित गेहूं का शीघ्र मिलिंग कराने के निर्देश

कटनी। कलेक्टर अवि प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित जिला उपार्जन समिति की बैठक में कलेक्टर द्वारा जरूरी दिशा निर्देश दिए गए। बैठक के दौरान जिला आपूर्ति अधिकारी सज्जन सिंह परिहार, मंडी सचिव के.पी.चौधरी, जिला प्रबंधक मध्य प्रदेश स्टेट सिविल सप्लाई कार्पोरेशन, जिला प्रबंधक मध्य प्रदेश वेयरहाउस लॉजिस्टिक कार्पोरेशन, उप संचालक कृषि एवं जिला विपणन अधिकारी उपस्थित रहे।

श्री प्रसाद द्वारा बैठक में उपार्जन कार्य की समीक्षा के दौरान गेहूं की खरीदी कम होने के संबंध में मंडी सचिव कृषि उपज मंडी कटनी से चर्चा की जाकर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए।

गोदामों में भण्डारण व्यवस्था के संबंध में महाप्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम से जानकारी लिये जाने पर बताया गया कि गोदामों में अभी पहले की धान ही भण्डारित है, इस पर श्री प्रसाद ने निर्देशित किया कि गोदामों में भण्डारित धान की मिलिंग कार्य में तेजी लाई जाये।

साथ ही मिलिंग कार्य में रूचि न लेने वाले मिलरों के विरूद्ध कार्यवाही प्रस्तावित करने के निर्देश कलेक्टर ने महाप्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम को दिए। इस संबंध में मिलर्स की बैठक शीघ्र आयोजित करने करने हेतु निर्देशित किया गया।

(पृष्ठ 6 का शेष)

खेतों और बगीचों के लिए मिट्टी ...

- मृत खांचों, गीले स्थानों, मुख्य बांध के पास के क्षेत्रों, पेड़ों और खाद के ढेरों और सिंचाई चैनलों में नमूना लेने से बचें।
- उथली जड़ वाली फसलों के लिए 15-20 सेमी गहराई तक नमूने एकत्र करें। गहरी जड़ वाली फसलों के लिए 30 सेमी गहराई तक नमूने एकत्र करें। वृक्ष फसलों के लिए प्रोफाइल नमूने एकत्र करें।
- मिट्टी का नमूना लेने से पहले उस स्थान को साफ कर लें। नमूना स्थल पर सतही कूड़े को हटा दें।
- नमूना गहराई तक एक समान टुकड़ा एकत्र करना बहुत महत्वपूर्ण है। यह नमूना लेने के दौरान की जाने वाली एक सामान्य गलती है जब गड्ढा खोदने वाला व्यक्ति खुदाई करते समय नमूना एकत्र करता रहता है। ऐसे मामले में गहराई के संबंध में नमूना विषम हो जाता है। खुरपी का उपयोग करते समय, अनुशंसित प्रक्रिया यह है कि पहले हल की परत (15-20 सेमी) तक वी आकार का कट खोदें। सारी मिट्टी हटा दो, फिर वर्दी ले लो किनारे से 1.5-2.5 सेमी मोटा टुकड़ा।
- प्रतिनिधि नमूना प्राप्त करने के लिए कम से कम 10-15 स्लाइस एकत्र की जानी चाहिए। प्रतिनिधि नमूना लेने के लिए क्षेत्र का सीमांकन दृश्य निरीक्षण और मिट्टी की एकरूपता के संबंध में पिछले अनुभव के आधार पर किया जाना है।
- उप नमूनों को एक प्लास्टिक ट्रे में एकत्र करें।

नमूना लेने की आवृत्ति और समय: मिट्टी का परीक्षण हर तीन साल में किया जाना चाहिए। बुआई/रोपण से पहले मिट्टी का नमूना लें, ताकि मिट्टी का उपचार करने का समय मिल सके। नमूनाकरण प्रत्येक वर्ष एक ही समय पर किया जाना चाहिए। एक ही महीने में सैंपल लेना बेहतर होता है।

उपकरण: खुरपी, ट्यूब बरमा या कुदाल का उपयोग नरम या नम मिट्टी के नमूने के लिए किया जा सकता है। स्क्रू बरमा का उपयोग कठोर या सूखी मिट्टी पर किया जा सकता है। मिट्टी के नमूने एकत्र करते समय धातु उपकरणों के उपयोग से बचना चाहिए।

- बैग पर किसान का नाम, खेत का स्थान, पिछली उगाई गई फसल, अगले सीजन में उगाई जाने वाली फसल, संग्रहण की तारीख आदि जैसी जानकारी का लेबल लगाएं।

मिट्टी का नमूना सावधानी से मिलाएं

एक ही नमूना क्षेत्र से मिट्टी के सभी उपनमूनों को एक साफ कंटेनर में रखें और अच्छी तरह मिलाएं। नमूने को छोटे-छोटे कणों में तोड़ने की चिंता न करें। नमूने को और मिश्रित करने के लिए प्रयोगशालाओं में मिट्टी की चक्की होती है।

मिट्टी के नमूने का विश्लेषण

- ऐसी प्रयोगशाला की तलाश करें जो मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट पेश करती हो जिसे आप समझते हों। मृदा परीक्षण परिणामों के आधार पर सिफारिशें प्रदान करने के लिए प्रयोगशालाएं शुल्क ले सकती हैं।
- प्रयोगशाला चुनने के बाद किसी भी आवश्यक कागजी कार्रवाई (जैसे सूचना पत्र) का अनुरोध करें और पता लगाएं कि आपको नमूना कैसे तैयार करना और जमा करना चाहिए।
- प्रयोगशाला के निर्देशों के अनुसार नमूना तैयार करें और जमा करें। प्लास्टिक जिपर बैग सबसे अच्छा काम करते हैं। पेपर बैग का उपयोग तब तक न करें जब तक लैब प्लास्टिक से ढका हुआ बैग उपलब्ध न करा दे। अधिकांश प्रयोगशालाएं आपसे नमूना बैग पर पहचान संबंधी जानकारी लेबल करने और नमूने के साथ एक सूचना पत्र भरने और शामिल करने के लिए कहती हैं।
- यदि आप नाइट्रोजन परीक्षण का अनुरोध कर रहे हैं तो नमूने को ठंडा रखें और तुरंत प्रयोगशाला में भेजें।
- उन नमूनों के लिए जिनका नाइट्रोजन के लिए परीक्षण नहीं किया जाएगा, शिपमेंट के लिए पैकेजिंग से पहले नमूने को हवा में सूखने के लिए अखबार पर फैला दें।
- प्रत्येक नमूने को क्रमांकित करें, नमूने की गहराई रिकॉर्ड करें और आपके द्वारा नमूना लिए गए फील्ड और क्षेत्रों का रिकॉर्ड रखें। पहले लेबल किए गए नमूना बैगों का फोटो लें।

किस विश्लेषण का अनुरोध करना चाहिए?

मानक मिट्टी विश्लेषण में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस (पी), पोटेशियम (के), कैल्शियम (सीए), मैग्नीशियम (एमजी), मिट्टी पीएच और लवणीयता की जांच शामिल करें।

समय के साथ नमूनाकरण

एक बार आपने शोध करके एक प्रयोगशाला का चयन कर लिया। नमूना विश्लेषण को सुसंगत रखने और मिट्टी के पोषक तत्वों में परिवर्तन का पता लगाने के लिए भविष्य के परीक्षणों के लिए उसी प्रयोगशाला का उपयोग करने की योजना बनाएं। इसके अलावा अपनी मिट्टी का नमूना वर्ष के एक ही समय, समान गहराई और समान अनुमानित क्षेत्र स्थान पर लेने की योजना बनाएं।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

- 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
- अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
- वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
- वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
- इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

खरगौन में

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री बालकृष्ण पाटीदार
13 ए, श्रीनाथ कॉलोनी, खरगौन
जिला - खरगौन (म.प्र.)

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

● औषधीय ● वन ● सब्जी ● फूल ● बीज ● स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ● कीटनाशक ● जैविक खाद ● गार्डन टूल ● जैविक उत्पाद ● ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध। **वितरक** - ● निर्मल सीड्स, जलगांव ● कलश सीड्स, जालाना ● अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ● दिनाकर सीड्स, गुजरात ● सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ● स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ● जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ● स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ● अनु प्रोडक्ट्स लि. ● श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

अर्जुन इण्डस्ट्रीज
AN ISO 9001:2015 QMS CERTIFIED INDUSTRIES
समस्त कृषि यंत्रों के निर्माता एवं विक्रेता
● ट्राली ● टेंकर ● कल्टीवेटर ● बोनी मशीन ● पल्टीप्लाऊ

लाम्बाखेड़ा ओवरब्रिज, बायपास चौराहा, बैरसिया रोड, भोपाल (म.प्र.)
मो. 9826097991, 9826015664, 9981415744

कलेक्टर ने कृषि विभाग द्वारा संचालित गतिविधियों का किया अवलोकन

जबलपुर। कलेक्टर दीपक सक्सेना ने कृषि एवं संबद्ध विभागों के द्वारा चलाई जा रही विभिन्न हितग्राहीमूलक योजनाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय संस्थान बोरलॉग (बीसा) का भ्रमण किया। इस दौरान बीसा के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. रवि गोपाल द्वारा संस्थान में किये जा रहे विभिन्न शोध कार्यों की जानकारी दी गई। जिसमें हैप्पीसीडर से गेहूं के बाद सीधे मूंग की बोनी करना, ड्रोन के द्वारा मूंग की फसल पर नैनो यूरिया एवं डीएपी छिड़काव का प्रदर्शन, बूमरेन द्वारा कीटनाशक के छिड़काव का प्रदर्शन, ट्रैक्टर के मूल पहिये हटाकर फील्ड में प्लांट से प्लांट की दूरी के अनुसार पतले एवं फसल की ऊंचाई से काफी ऊंचे चके ट्रैक्टर में लगाकर इंटर कल्चर का प्रदर्शन, इस अटैचमेन्ट से फसल को कोई नुकसान नहीं होता। आलू की फसल के बाद जीरो टिल सीड ड्रिल से मक्के की बोनी का प्रदर्शन दिखाया गया है।

बीसी संस्था प्रमुख द्वारा बताया गया कि संस्थान में लगभग 1000 विभिन्न किस्मों के गेहूं का बीज तैयार कर भारत एवं साउथ एशिया के देशों में भेजा जाता है। ट्रैक्टर में मॉडीफाइड पावर ब्रीडर द्वारा खरपतवार नियंत्रण का प्रदर्शन किया गया। कलेक्टर ने बोरलॉग इंस्टीट्यूट के नवाचार को देखने के बाद डोंडी पिपरिया और धरहर गांव में किसानों द्वारा किये जा रहे कृषि क्षेत्र में किये जा रहे नवाचारों को भी देखा।

हैप्पी सीडर कृषकों के लिये एक उपयोगी साधन

कलेक्टर ने कहा कि प्राय: परम्परागत रूप से की जाने वाले सभी चीजें अच्छी मानी जाती है। ठीक इसी प्रकार कृषि क्षेत्र में भी है। लेकिन नवीन तकनीकों के प्रयोग से बेहतर परिणाम को प्राप्त किया जा सकता है। परंपरागत खेती के स्थान पर अब खेत की बिना जुताई किये हैप्पी सीडर से बोनी करना निश्चित ही लाभकारी है। इसमें उत्पादन में वृद्धि के साथ समय, श्रम और लागत की बचत हो जाती है। अब समय की मांग है कि हैप्पी सीडर के संबंध में किसानों को जानकारी सुनिश्चित की जाये जिससे वे इसका प्रयोग कर सकें।

स्टीविया फसल का किया अवलोकन

ग्राम आमाखीह में कृषक एवं एन.जी.ओ. संचालक अंबिका पटेल के प्रक्षेत्र पर स्टीविया फसल का अवलोकन एवं स्टीविया का उपयोग के बारे में कृषक द्वारा बताया गया। साथ ही कृषक के पॉली हाउस का अवलोकन किया।

वर्मी कम्पोस्ट और पराली ब्रिक्स का किया अवलोकन

कलेक्टर श्री सक्सेना ने विकासखंड पनागर के ग्राम जटवा में कृषक बृजेश विश्वकर्मा की वर्मी कम्पोस्ट इकाई का निरीक्षण किया। जिसमें श्री विश्वकर्मा द्वारा बताया गया कि परियट में उत्पन्न लगभग 70 ट्रॉली गोबर को प्रत्येक दिन एकत्रित करके वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण किया जा रहा है। कलेक्टर के भ्रमण के समय परियोजना संचालक आत्मा एस.के. निगम, उप संचालक कृषि रवि कुमार आम्रवंशी, उप संचालक उद्यान नेहा पटेल, उप संचालक पशुपालन श्री मून, सहायक संचालक मत्स्य पालन तरूण पटेल, अनुविभागीय कृषि अधिकारी प्रतिभा गौर, सहायक संचालक कृषि कीर्ति वर्मा सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

कृषि अधिकारियों को उर्वरक विक्रय केन्द्रों का निरीक्षण के निर्देश

सतना। उप संचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास मनोज कश्यप ने बताया कि खरीफ फसलों के लिये जिले के सहकारी एवं निजी क्षेत्रों में उर्वरक पर्याप्त मात्रा में भंडारित है। साथ ही शासन से उर्वरक की रैक प्रदाय की जा रही है। कृषकों के हितों को ध्यान में रखते हुये जिले के सभी उर्वरक निरीक्षकों और वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारियों को उर्वरक विक्रय केंद्रों का निरीक्षण करने के निर्देश दिये गये हैं।

श्री कश्यप ने बताया कि कृषि अधिकारियों और निरीक्षकों को निर्देश दिये गये हैं कि उर्वरक केंद्रों के निरीक्षण के दौरान उर्वरक की भौतिक मात्रा का मिलान आईएफएमएस पोर्टल में फीड मात्रा से करना सुनिश्चित करेंगे। इसके अलावा विक्रय केंद्र पर रेट सूची और स्टॉक प्रदर्शन बोर्ड की व्यवस्था करने तथा कृषकों को निर्धारित दर पर उर्वरक का विक्रय करने प्रत्येक उर्वरक विक्रेता को निर्देशित करना भी सुनिश्चित करेंगे। उप संचालक ने सभी उर्वरक निरीक्षकों और कृषि विकास अधिकारियों को निर्देश दिये हैं कि यदि किसी उर्वरक विक्रेता द्वारा निर्धारित दर से अधिक कीमत पर उर्वरक का विक्रय किया जा रहा हो अथवा किसी प्रकार की अनियमितता की जा रही हो, तो संबंधित विक्रेता के विरुद्ध उर्वरक नियंत्रण आदेश 1985 के तहत कार्यवाही करना सुनिश्चित करेंगे।

उर्वरक वितरण में अनियमितता एवं अधिक दर पर उर्वरक विक्रय की सूचना किसी भी माध्यम से उप संचालक कृषि विकास तथा किसान कल्याण कार्यालय सतना को प्राप्त होती है, तो इसकी संपूर्ण जवाबदारी संबंधित क्षेत्र के कृषि अधिकारी की होगी।

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें

रबी फसलों की कृषि कार्यमाला मूल्य 40/- · फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन मूल्य 250/- · चने की उन्नत खेती मूल्य 20/- · सब्जियों की उन्नत तकनीकी मूल्य 100/- · फसलों में कीट रोग प्रबंधन मूल्य 70/- · सब्जियों में पोषक तत्व प्रबंधन मूल्य 20/- · फूलों की खेती मूल्य 30/-

धान की उन्नत खेती मूल्य 100/- · सोयाबीन की खेती मूल्य 20/- · खरीफ फसलों की खेती मूल्य 50/- · कपास की खेती मूल्य 50/- · गन्ने की खेती मूल्य 25/- · पशुपालन मूल्य 100/- · बकरी पालन मूल्य 100/-

जैविक खेती मूल्य 50/- · वर्मी कम्पोस्ट मार्गदर्शिका मूल्य 30/- · खरपतवार प्रबंधन मूल्य 50/- · भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके मूल्य 30/- · कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव मूल्य 50/- · दलहनी फसलों की खेती मूल्य 30/- · तिलहनी फसलों की उन्नत खेती मूल्य 50/-

गुलाब की खेती मूल्य 30/- · फलों की उन्नत खेती मूल्य 50/- · ट्रैक्टर का रखरखाव मूल्य 50/- · मिर्च की उन्नत खेती मूल्य 30/- · फलों का औष. उपयोग मूल्य 100/- · मधुमक्खी पालन मूल्य 150/-

कृषक दूत मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16, ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल-16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम...

संस्था का नाम...

पूरा पता...

ग्राम............................पोस्ट............................तहसील............................

जिला............................राज्य............................पिन कोड

दूरभाष/कार्या. .... घर .... मोबा. : ....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रिवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/-
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र "कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में)........................ (शब्दों में)........................

बैंक का नाम........................ ड्राफ्ट चेक क्रमांक........................

दिनांक........................ संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान........................ प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक........................ एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

कृषि अधिकारी एवं वैज्ञानिकों ने किया फसलों का निरीक्षण

नरसिंहपुर। कलेक्टर शीतला पटले के निर्देशन में कृषि विभाग के अधिकारियों व कृषि वैज्ञानिकों ने जिले के ग्राम डोकरघाट, धबई, सांवलरानी, चीलाचौनकलां, समनापुर, मुड़िया एवं अन्य ग्रामों का निरीक्षण कर फसलों का जायजा लिया।

उप संचालक कृषि उमेश कटहरे, अनुविभागीय कृषि अधिकारी शिल्पी नेमा, कृषि विज्ञान केंद्र की वैज्ञानिक डॉ. निधि वर्मा, पूजा पाठक व ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी अंजू जाटव ने ग्रामों का निरीक्षण कर फसलों का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान ग्राम डोकरघाट में कृषक रुस्तम खान एवं राकेश पटेल द्वारा नरवाई जलाये बिना जीरो टिलेज अंतर्गत सुपर सीटर के माध्यम से मूंग की बोनी की गई। इससे मृदा में नमी बनी रहती है, क्षरण कम होता है और पानी की बचत होती है, इससे किसान संतुष्ट हैं। ग्राम धबई, सांवलरानी, चीलाचौनकलां, समनापुर, मुड़िया एवं अन्य ग्रामों में लगभग 200 एकड़ जमीन में जीरो टिलेज के माध्यम से मूंग की बोनी की गई है। जिले में 40- 50 दिन की अवधि में मूंग की फसल हो गई है।

इन फसलों में अभी रोग एवं कीटों का प्रकोप नहीं पाया गया, फसल की स्थिति ठीक है। भविष्य में कीट व्याधि के बचाव के लिए थायोप्लस लेम्डा साइक्लोथ्रीन 80 मिली प्रति एकड़ की दर से छिड़काव किया जा सकता है। जिले में विशेष अभियान के तहत गन्ने के साथ सब्जियों की अंतरवर्तीय खेती के प्रति रुझान बढ़ा है। ग्राम मुड़िया के कृषक शिवकुमार पटेल एवं अन्य कृषकों द्वारा गन्ने की फसल के साथ मूली व धनिया की फसल की बोई गई है। साथ ही ग्रीष्मकालीन मूंग 122422 हेक्टेयर, उड़द 5137 हेक्टेयर एवं सोयाबीन का रकबा भी 7085 हेक्टर हुआ है।

किसानों से अपील की गई है कि वे उर्वरक का अग्रिम उठाव करें, ताकि आने वाले खरीफ मौसम में होने वाली परेशानी से बचा जा सके। साथ ही जिले में संतुलित उर्वरकों की पूर्ति संभव हो सके एवं किसी भी उर्वरक की कोई कमी न हो। किसानों द्वारा अग्रिम उठाव करने पर खरीफ मौसम के लिए उर्वरक की मांग की जा सके।

जल संरक्षण एवं जैविक खेती कृषक संगोष्ठी सम्पन्न

शहडोल। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा प्रायोजित जलागम विकास परियोजना के अन्तगर्त ग्राम परखुंडी में जल संरक्षण एवं जैविक खेती विषय पर कृषक संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमे कृषि विज्ञान केंद्र शहडोल के वैज्ञानिक डॉ. ब्रजकिशोर प्रजापति द्वारा कृषकों को महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। बारिश में बरसात कम आती है या असमय से आती हैं तो किसानों के लिए समस्या उत्पन्न हो जाती है। इन परिस्थितियों में या तो फसल की बुवाई नहीं हो पाती है अथवा फसल बर्बाद हो जाती है फलस्वरूप: किसानों को आर्थिक क्षति का सामना करना पड़ता है।

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली फसलों में उर्वरक व पानी देने की सर्वोत्तम एवं आधुनिक विधि मानी जाती है। सूक्ष्म सिंचाई पद्धति का इस्तेमाल करने में फायदा-ही-फायदा है। इसके अतिरिक्त डॉ. प्रजापति ने कृषकों को बताया कि यदि किसान अपने खेत में ड्रिप सिंचाई सिस्टम या स्प्रिंकलर सिंचाई सिस्टम लगवाते हैं तो इससे करीब 60 प्रतिशत पानी की बचत की जा सकती है। साथ ही यह भी बताया कि कृषक मई-जून के महीने में मिट्टी पलटने वाले हल से खेतों की ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करते हैं तो किसानों को इसके अनेक लाभ प्राप्त होंगे।

इस प्रकार की जुताई से मृदा का सूर्य की किरणों से सीधा उपचार होता है। इस जुताई से हानिकारक कीट व पौध रोगकारक नष्ट हो जाते हैं। मिट्टी की जल धारण क्षमता में वृद्धि होती है जिससे कि जड़ो की अच्छी वृद्धि होती है। इस कार्य से खरपतवारनाशियों के अवशेषो का तीव्र विघटन होता है। गहरी जोताई का मृदा के भौतिक गुणों पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही मृदा में वायु संचार में बढ़ोत्तरी होती है। इसके साथ-साथ मृदा भी संरक्षित होती है। ग्रीष्मकालीन जुताई के बाद खेती की लागत में कमी आती है। साथ ही उपज में लाभ औसतन 10 प्रतिशत तक बढ जाती है।

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई रबी मौसम की फसल कटने के बाद शुरू हो जाती है, जो बरसात प्रारंभ होने तक चलती रहती है। किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग शहडोल से उपसंचालक श्री आर पी झरिया द्वारा किसानों को जानकारी दी गयी कि वैश्विक स्तर पर उपलब्ध कुल जल संसाधनों का मात्र 4 प्रतिशत हिस्सा भारत के पास है। वहीं विश्व की कुल आबादी में देश की 16 प्रतिशत की हिस्सेदारी है।

इसी तथ्य से यह संकेत मिलता है कि जल संसाधन की उपलब्धता यहां पर किस हद तक सीमित है और यही कारण है कि जल के अपव्यय और दुरुपयोग पर समय रहते अंकुश लगाना अब जरूरी हो गया है। साथ ही यह भी बताया लगातार एक प्रकार की फसलों को उगाने से मृदा की उर्वरा शक्ति में गिरावट आ जाती है। इसके साथ ही कीड़े-मकोड़ों, रोगों और खरपतवारों का नियंत्रण भी एक गंभीर समस्या बन जाती है। फसल चक्र द्वारा विविधीकरण करके इन समस्याओं का निवारण किया जा सकता है।

ग्रीष्मकाल मृदा की जांच के लिये सर्वोत्तम समय: डॉ. बघेल

कृषि वैज्ञानिकों ने कृषकों को बताये माटी को स्वस्थ रखने के गुर

सिवनी। कृषि विज्ञान केन्द्र सिवनी द्वारा बरघाट विकासखण्ड के मलारा ग्राम में मृदा परीक्षण शिविर एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर किसानो को मिट्टी का नमूना लेने की विधि बताई गई और मृदा परीक्षण के महत्व के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी गई।

किसानों से बात करते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. शेखर सिंह बघेल ने कहा कि आज हमारी मृदा बीमार हो गई है, इसका स्वास्थ्य बहुत खराब है। जब तक किसान मिट्टी के स्वास्थ्य की रक्षा नहीं करेंगे तथा उसका ध्यान नहीं रखेंगे तब तक जमीन से हम अच्छा पोषण युक्त खाद्यान्न, दलहन-तिलहन, फल-सब्जी, पशुओं के लिए पोषण युक्त चारा नहीं प्राप्त कर सकते। श्री बघेल ने बताया कि मृदा परीक्षण के लिये मई का माह सर्वोत्तम होता है। उन्होंने कहा मृदा का स्वास्थ्य अच्छा बना रहे तथा उससे बेहतर उत्पादन मिलता है। इसके लिए किसानों को हर तीसरे साल के अंतराल पर अपने खेतों की मिट्टी की जांच अवश्य करानी चाहिए। मृदा परीक्षण प्रयोगशाला में 12 पोषक तत्वों की जांच की जाती है। मृदा जांच से पता चल जाता कि जमीन में कौन-कौन से पोषक तत्वों की कमी है। इसके बाद किसान मृदा जांच के आधार पर संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरक एवं पोषक तत्व अपने खेतों में डालकर अच्छा उत्पादन ले सकते हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. के.के. देशमुख ने कृषकों को मृदा के सही नमूने लेकर मृदा की जांच हेतु प्रयोगशाला में भेजने हेतु पत्रक को सही भरना की जानकारी दी।

मृदा का परीक्षण एवं नमूना एकत्रीकरण शिविर के दौरान कृषि वैज्ञानिक डॉ. राजेन्द्र सिंह ठाकुर ने महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का संचालन ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी विक्रम सिंह एवं आभार प्रदर्शन इंजि. कुमार सोनी द्वारा किया गया। इस दौरान ग्राम मलारा के सरपंच विलंग सिंह इनवाती एवं कृषकों की उपस्थिति रही।

छिंदवाड़ा जिले में उर्वरकों का पर्याप्त भंडारण

किसानों से उर्वरकों का अग्रिम उठाव करने की अपील

छिंदवाड़ा। कलेक्टर शीलेन्द्र सिंह के निर्देशानुसार जिले में सभी उर्वरकों का पर्याप्त भंडारण मार्कफेड के सभी डबल लॉक गोदामों व सभी 146 सहकारी समितियों तथा निजी क्षेत्रों में कराया गया है।

जिले में 6203.5 मीट्रिक टन यूरिया, 13173 मीट्रिक टन सिंगल सुपर फास्फेट, 7798 मीट्रिक टन डीएपी, 7298 मीट्रिक टन एनपीके, 4191 मीट्रिक टन म्यूरेट ऑफ पोटाश उपलब्ध है। खरीफ सीजन नजदीक है और सीजन में असुविधा से बचने के लिये श्री सिंह द्वारा लगातार समीक्षा कर सहकारी समितियों से अग्रिम उठाव के लिये महाप्रबंधक जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित छिंदवाड़ा को निर्देशित किया गया है। साथ ही बैठक लेकर कृषि विभाग के मैदानी अमले को भी किसानों को प्रोत्साहित कर उर्वरकों के अग्रिम उठाव कराने के लिये निर्देश दिये गये हैं। उप संचालक कृषि जितेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि खरीफ सीजन 2024 की तैयारियों की बैठक में उद्यानिकी महाविद्यालय के डीन एवं सह संचालक आंचलिक कृषि अनुसंधान केन्द्र चंदनगांव डॉ. विजय पराडकर द्वारा किसानों से अपील की गई है कि किसान मृदा स्वास्थ्य कार्ड की अनुशंसा के अनुसार ही संतुलित उर्वरकों का उपयोग करें। विशेष रूप से मक्का फसल में प्रति एकड़ 2 से 3 बोरी यूरिया का ही उपयोग करें। एनपीके उर्वरक जिसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश तीनों तत्वों की उपलब्धता है, उसका उपयोग किया जाये। कलेक्टर श्री सिंह एवं उप संचालक कृषि श्री सिंह द्वारा किसानों से अपील की गई है कि आवश्यकतानुसार तत्काल उर्वरकों का अग्रिम उठाव अपने क्षेत्र की सहकारी समितियों एवं मार्कफेड के डबल लॉक केन्द्रों (गोदाम) से करें एवं सीजन मे होने वाली असुविधा से बचें।

आर.एन.आई.नं. एमपी एचआईएन/2000/06836 डाक पंजीयन क्र. एम.पी./ भोपाल/625/2024-26 कृषक दूत- एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.) Email:- krishak_doot@yahoo.co.in डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार

कृषक दूत

पृष्ठ क्रमांक-16
भोपाल मंगलवार 14 से 20 मई 2024

उम्मीद से ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

Chetak DI 65 | 50 HP

विशेषताएं

- पावर स्टेयरिंग
- कांस्टेंट मेश गियर
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्यूल क्लच
- लिफ्ट 2000 kg
- तेल में डूबे ब्रेक
- आगे के टायर 7.5x16
- पीछे के टायर 14.9x28

खेती और ढुलाई में सबसे बड़ा आलराउंडर

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पावर स्टेयरिंग
- साईड शिफ्टिंग गियर
- 2858 cc का दमदार इंजन
- व्हील बेस 1970 MM
- ड्यूल क्लच
- एडवांस हाईड्रोलिक
- इंजन टार्क 175 NM

पॉवर दमदार
माइलेज शानदार

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15-90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 13/- वार्षिक शुल्क- 700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube